आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/ UD/ 29-150/ 2020-2022

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जनसंवाद का पाक्षिक

वर्ष 5 | अंक 16 | उदयपुर मंगलवार 01 सितंबर 2020 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

पटचित्रों के प्राचीन उल्लेख

-डॉ. प्रेमसुमन जैन -

राजस्थानी लोकजीवन में पड़ चित्रांकन की परम्परा धार्मिक आस्था के रूप में प्रचलित है। इस सम्बन्धी पहलीबार भारतीय लोककला मण्डल द्वारा डॉ. महेन्द्र भानावत ने शोधकार्य किया। सबसे पहले देवनारायण की पड़ बनी। बगड़ावत लोकगाथा में इसका उल्लेख मिलता है। पाबूजी की पड़ का सर्वाधिक प्रचार हुआ। रामदला, कृष्णदला की पड़ें भी फिर अस्तित्व में आईं। इस सम्बन्धी डॉ. भानावत लिखित देवनारायण रो भारत, पाबूजी की पड़, रामदला की पड़, पड़ कावड़ कलंगी पुस्तकें पठनीय हैं।

प्रो. प्रेमसुमन जैन प्राकृत भाषा के प्रकाण्ड पंडित और मनीषी अध्येता हैं। सुखाड़िया विश्वविद्यालय में जब प्राकृत विभाग प्रारम्भ हुआ तब ये पहले प्रोफेसर अध्यक्ष बने। इनके निर्देशन में अनेक छात्रों ने शोधकार्य किया और उच्च पदों पर सेवाएं दे रहे हैं।

प्राचीन साहित्यिक सन्दर्भों के आधार पर पटचित्रों के प्रमुख तीन प्रकार प्राप्त होते हैं- (1) व्यक्तिगत चित्र (2) धार्मिक चित्र (3) कथात्मक चित्र।

व्यक्तिगत चित्र :

व्यक्तिगत चित्रों के दर्शन की परम्परा यद्यपि अभिजात वर्ग में विशेष रूप से प्रचलित थी किन्तु इसने लोकजीवन को भी काफी प्रभावित किया। अनेक लोकगाथाओं में चित्रदर्शन के प्रसंग प्राप्त होते हैं। आठवीं सदी में इन व्यक्तिगत चित्रों के साथ अनेक गुप्त और रहस्यपूर्ण विषय भी चित्रित किये जाने लगे जिनका उपयोग पूर्ववृतान्त स्मरण के लिए किया जाता था। प्रकट रूप में वे लोगों का मनोरंजन ही करते थे।

धार्मिक पटचित्र :

ऐसे पटचित्रों का मुख्य विषय धार्मिक रहा है। लम्बी-लम्बी पटों का निर्माण धार्मिक विषय वस्तु के कारण ही हुआ है। उनमें अनेक विषयों का चित्रण करना पड़ा था। धार्मिक चित्रों में धार्मिक महापुरुषों, साधु-साध्वियों, भक्तजनों एवं पारलौकिक जीवन के चित्र अधिक अंकित किये मिलते हैं। इन चित्रों का लोक में हमेशा आदर रहा है। यमपट नामक चित्र अधिक प्रचलित थे जिनमें भैंसे पर चढ़े हुए यमराज का चित्र लिखा रहता था। ऐसे चित्रपट मृत्यु के बाद भी यातनाओं के दर्शन कराते थे।

गुप्तकाल में बुद्धघोष के अनुसार अपने कर्मों के फलस्वरूप स्वर्ग-नरक में सुभोग या कुभोग दर्शाने वाले चित्रपट को चरणचित्र कहा जाता था। हर्षचरित में इन चित्रों के प्रदर्शक को यमपट्टिक कहा गया है जो जोर-जोर से चित्रों को पद्यों में समझाते थे।

आठवीं सदी में इस तरह के पटचित्र 'भवचक्र' नाम से अभिहित किये जाने लगे। ये चित्र फैलाकर छड़ी के अग्रभाग द्वारा दर्शक को दिखाये जाते थे। समझाने के लिए पद्यों का ही प्रयोग होता था। इससे एक बात स्पष्ट होती है कि ये चित्र एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी के हाथों में सौंपे जाते रहे।

कथात्मक पटचित्र :

व्यक्तिगत एवं धार्मिक चित्रों के अतिरिक्त वस्त्रों पर कुछ ऐसे चित्र भी बनाये जाते थे जिनका सम्बन्ध किसी न किसी कथा अथवा कथांश से होता। यह कथा महापुरुषों के जीवन से भी सम्बन्धित हो सकती थी और एक साधारण लोककथा भी। पटचित्रों के प्रदर्शन द्वारा लोगों का मनोरंजन कर जीविका कमाने के अनेक उल्लेख मिलते हैं। कुवलयमालाकहा में दो वणिक पुत्रों का पटचित्र कथात्मक पटचित्रों की परम्परा का परिचायक है जिसका विकास आगे चलकर राजस्थान की पड़ों एवं बंगाल के पटचित्रों में देखने को मिलता है।

पटचित्रकला के जो उल्लेख प्राप्त हैं उनकी तथा वर्तमान में उपलब्ध पटचित्रों की विषयवस्तु किसी न किसी प्रकार धार्मिक विश्वासों से सम्बन्धित होती है। आर्यकालीन लोकजीवन अदृष्ट देवलोक की अपेक्षा प्रत्यक्ष मानव लोक पर विश्वास करने लगता था। उस समय की कला में देवताओं की भीड़ का चित्रण न होकर सामान्य जनजीवन के दैनिक क्रिया-कलापों को अंकित किये जाने का उल्लेख मिलता है। इनकी विकसित परम्परा कुवलयमालाकहा के पटचित्रों के विवरण में प्राप्त है। यथा-

(1) भैंसे पर आरूढ़ यमराज (2) शिकार के लिए हाका करने वाले लोग (3) हल जोतने वाले कृषक पुत्र (4) हल में जुते हुए बैल (5) मजदूरी करता हुआ परिवार का मुखिया (6) जलती हुई चिता (7) चिता के पास सोते हुए सम्बन्धी (8) पिंजरे में बन्द शुक-सारिका (9) प्रसव करती हुई महिला (10) मुर्गों, तोतों, सारिका, भेड़ से खेलता हुआ बालक (11) चिथड़े पहने हुए दरिद्र भिखारी (12) परद्रव्य हरण करने वाला डाकू (13) मछली पकड़ता मछुआरा (14) सौदा बेचता हुआ बनिया (15) उफनते जल की वैतरिणी नदी (16) सूखी हुई फसल (17) गौन से लदे हुए बैल (18) समुद्र के बीच में जहाज भग्न (19) पर्वत शिखर से गिरते हुए युवक (20) गणेशजी का चित्र (21) यक्ष-

यक्षिणी (22) बन्दरों का नृत्य (23) पांच पाण्डव, द्रोपदी एवं कुन्ती (24) सास बहू का झगड़ा (25) शनिचर महाराज का चढ़ावा (26) अपूती रांड की करनी का फल (27) बेटी का धन खाने वाले की दुर्गति (28) झूठ बोलने वाले की दुर्गति (29) कोली, रैदास, कुम्हार, तेली, जाट एवं सेठ के अच्छे कार्य (30) भैंसासुर एवं अन्य लौकिक देवी-देवताओं के चित्र (31) अश्वारूढ़ काली तथा भैरव।

धर्म प्रचार के लिए चित्रों का बहुविध उपयोग होता था। जहां प्रचारक की भाषा जनता नहीं समझती थी वहां चित्रों की अभिव्यक्ति ही भावों की व्याख्या करने में समर्थ होती थी। धार्मिक प्रचार के लिए सम्भवत: सर्वप्रथम बौद्ध भिक्षुओं ने पटचित्रों का उपयोग किया। विभिन्न स्थानों पर भगवान बुद्ध की जीवनी व सिद्धान्त पटचित्रों में लिखवाकर प्रचारित किये गये। भारत के बाहर चीन, कोरिया, जापान, कम्बोदिया, जावा, सायम, लंका, बर्मा, नेपाल, तिब्बत, खूत्तन, अफगानिस्तान आदि देशों तक ये पटचित्र पहुंचे।

पटचित्रों के प्रारम्भिक उल्लेख आजीविका उपार्जन के सन्दर्भ में ही मिलते हैं। भगवान महावीर के समकालिक आचार्य गोशालक के वंशज चित्रपट विद्या (मंख विद्या) में निपूर्ण थे। मंख विद्या में निपूर्णता के कारण ही गोशालक के पिता को मंखली कहा गया। वे चित्रपट दिखा-दिखा कर अपनी आजीविका चलाते थे। ये मंख चार प्रकार के बताये गये हैं- (1) नितान्त मौन रह चित्रपट दिखाकर भिक्षा मांगने वाले (2) बिना चित्रपट दिखाये गाथा पढ़ने वाले (3) चित्रपट और गाथा कथन के बिना वाणी द्वारा कथन करने वाले (4) चित्रपट के साथ गाथाएं पढ़ते हुए अर्थ समझाने वाले।

पड़वाचक इन सभी प्रकार की क्रियाओं को करने वाले होते हैं। ऐसा ज्ञात होता है कि उस समय मंखों की कोई प्रतिष्ठा नहीं थी। महावीर ने जब गोशालक का परिचय मंखलि पुत्र के रूप में लोगों को बतलाया तो लोगों की दृष्टि में गोशालक का आदर गिर गया।

मुद्राराक्षस एवं हर्षचरित में उल्लिखित यमपट्टिक बाजार में सड़क के किनारे खड़े होकर बायें हाथ में लाठी के ऊपर चित्रपट को फैला रखते थे, जिसमें भयंकर भैंसे पर चढ़े हुए यमराज का चित्र लिखा होता था। यमपट्टिक दाहिने हाथ में पकड़े सरकण्डे द्वारा चित्र को दिखाता और परलोक में मिलने वाली यातनाओं का बखान करता। धीरे-धीरे इनमें अनेक देवी-देवताओं के चित्र भी बनने लगे। आजीविका के लिए कथात्मक पटचित्रों का भी उपयोग किया जाता। उत्तर रामचरित में खेदखिन्न सीता के मनोरंजन के लिए चित्रदर्शन को ही उपयुक्त समझा गया। मध्य युग में तो मनोरंजन के कारण ही चित्रकला का अभूतपूर्व विकास हुआ। वसन्त विलास नामक पटचित्र इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है। इस पट के 79 चित्रों में तत्कालीन लोककला का प्रतिनिधित्व हुआ है।

अजन्ता के भित्ति चित्रों में 17 नम्बर की गुफा में चौखट में जड़े हुए चित्र को गृहसज्जा के उपयोग का प्रारम्भिक साक्ष्य कहा जा सकता है। कथासरित्सागर में व्यक्तिगत चित्रों को वासभवन की भित्तियों पर लटकाने का उल्लेख प्राप्त है। आठवीं शताब्दी में चित्रशालाओं में भी पटचित्र लटकाये जाने लगे थे। उनकी अधिकता के कारण चित्रशालाओं का नाम भी पटशाला हो गया था।

पटचित्रों के लौकिक प्रयोग की दृष्टि से बंगाल के पटचित्र विशेष उल्लेखनीय हैं। ये पटचित्र मनोरंजन, विनोद, आजीविका के साधन माने जाते थे। डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल के शब्दों में - 'जनपदीय स्त्री-पुरुषों में चित्रकला के प्रति रूचि थी। अपने रहने के घरों और वस्त्रों तक को वे रेखा और वर्ण के चित्रात्मक विन्यासों से अलंकृत करते थे। घरों के चित्रात्मक अलंकरण की यह प्रथा आज भी बची हुई है। बांधून और पटोल की रंगाई के वस्त्र तो चित्रकला के ही विकसित रूप थे।'

उक्त विवरण से प्राचीन सन्दर्भों के प्रति गौरव की अनुभूति होती है किन्तु वर्तमान में उपलब्ध पटचित्रों की समुचित व्यवस्था एवं अध्ययन के अभाव में इस परम्परा को बचाये रखना सम्भव नहीं लगता।

पोथीखाना

राजस्थानी भाषा विज्ञान

राजस्थानी भाषा की प्राचीनता और समृद्धि को लेकर भारतीय भाषा परिवार में इसकी विशिष्ट एवं उल्लेखनीय पहचान रही है। इस विशिष्ट पहचान को लेकर भाषा विज्ञान की दृष्टि से राजस्थानी भाषा का मूल्यांकन करने की बात समय-समय पर मन में उठती थी, लेकिन व्यस्तता के फलस्वरूप इस दिशा में सक्रीय नहीं हो सका लेकिन मेरे परमस्नेही मित्र बी. एल. माली 'अशांत' ने इस दिशा में अपनी समर्थ लेखनी चला कर एक सराहनीय एवं श्लाघनीय कार्य किया है।

डॉ. महेन्द्रजी भानावत के माध्यम से बी. एल. माली अशांत की यह 'राजस्थानी भाषा विज्ञान' पुस्तक स्नेहवश मुझे प्राप्त हुई और इसे पढ़ कर मैं कुछ लिखने के लिये प्रेरित हुआ, इसके लिये मैं डॉ. भानावतजी का आभारी हूं।

मालीजी राजस्थानी भाषा के प्रति आजीवन समर्पित रहे हैं। उनका लेखन बहुमुखी रहा है। राजस्थानी साहित्य का इतिहास, शब्दकोश, राजस्थानी भाषा, व्याकरण, राजस्थानी गद्य व पद्य साहित्य, राजस्थानी लोकनाट्य, ध्वनि विज्ञान आदि उनकी चर्चित पुस्तकें रही हैं।

'आदि राजस्थानी पुस्तक' में तो मालीजी ने राजस्थानी को ऋग्वेदकाल से जोड़ कर एक नवीन दृष्टि दी है तथा कुछ सोचने के लिये बाध्य किया है। गद्य व पद्य में उनका सर्जनात्मक लेखन भी उनकी प्रतिभा को रेखांकित करता है। राजस्थानी भाषा व साहित्य के प्रति उनकी यह निष्ठा व समर्पण भाव राजस्थानी जगत में काफी प्रशंसनीय रहा है।

उनकी सद्य प्रकाशित पुस्तक 'राजस्थानी भाषा विज्ञान' मालीजी के मौलिक चिन्तन को रूपायित करती है। भाषाविज्ञान तो भाषाविज्ञान है, उसे प्राकृत, संस्कृत, हिन्दी, राजस्थानी आदि भाषाओं के सन्दर्भ में देखना, समझना और उसका मूल्यांकन करने में विद्वानों की अपनी-अपनी राय हो सकती है, लेकिन मालीजी ने राजस्थानी भाषा को भाषावैज्ञानिक कसौटी पर कस कर उसका जो मूल्यांकन इस पुस्तक में किया है, उनका यह नवीन किन्तु मौलिक चिन्तन है, जो भाषाविज्ञान के विद्वानों को कुछ सोचने के लिये बाध्य करता है।

मालीजी ने राजस्थानी भाषा के भाषावैज्ञानिक अध्ययन में राजस्थानी के आदि स्वरूप को ध्यान में रखते हुए अपने मन्तव्य को बेबाक तरीके से स्पष्ट किया है और विभिन्न उदाहरणों का सन्दर्भ देते हुए उन्होंने राजस्थानी भाषा के भाषावैज्ञानिक स्वरूप को तर्कों के साथ स्पष्ट करने का पूरजोर प्रयास किया है।

इस प्रयास में इस पुस्तक के कथ्य को भाई मालीजी ने बारह अध्यायों में स्पष्ट किया है। प्रथम अध्याय भाषाविज्ञान की तकनीकी शब्दावली से सम्बन्धित है। इस अध्याय में मालीजी ने भाषाविज्ञान से सम्बन्धित लगभग 50 शब्दों के अर्थ को समझाते हुए बताया है कि तकनीकी शब्द भाषाविज्ञान के मूलाधार हैं जिनका किसी भी भाषा का भाषावैज्ञानिक अध्ययन करने एवं उसे समझने में काफी महत्त्वपूर्ण योगदान रहता है।

पुस्तक का द्वितीय अध्याय 'विषय प्रवेश' शीर्षक से प्रस्तुत किया गया है। यह अध्याय इस पुस्तक की भूमिका के रूप में

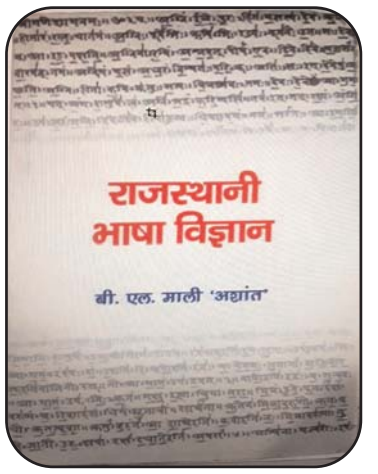

पुस्तक के कथ्य को स्पष्ट करता है तथा बताता है कि भाषाविज्ञान भाषा का क्रमबद्ध ज्ञान है। तृतीय अध्याय 'लोक भाषाविज्ञान अर भाषाविज्ञान' से सम्बन्धित है। इस अध्याय में मालीजी ने लोक भाषाविज्ञान और भाषाविज्ञान के पारस्परिक सम्बन्ध को स्पष्ट करते हुए बताया है कि भाषाविज्ञान भाषा के साथ-साथ भाषा समूहों का भी अध्ययन है। इसी दृष्टि के आधार पर इस पुस्तक में राजस्थानी भाषा के भाषावैज्ञानिक अध्ययन को स्पष्ट किया है। चतुर्थ अध्याय 'भाषा विज्ञान: नाम, अर्थ, परिभाषा और भाषा विज्ञान' के क्षेत्र को व्याख्यायित करने वाला अध्याय है। इस अध्याय की विषयवस्तु इस अध्याय के शीर्षक से ही स्वत: स्पष्ट हो जाती है कि इस अध्याय का इस पुस्तक में क्या महत्व है?

अगले चार अध्याय ध्वनिविज्ञान, शब्दविज्ञान, रूपविज्ञान, वाक्यविज्ञान और अर्थविज्ञान से सम्बन्धित हैं। राजस्थानी भाषा के भाषावैज्ञानिक स्वरूप की रूपायित करने के लिये ये अध्याय पुस्तक की मूल आत्मा है। मालीजी ने इन चारों अध्यायों के आधार पर राजस्थानी भाषाविज्ञान को तर्कसंगत एवं प्रामाणिकता के सन्दर्भ में यथास्थान उदाहरणों को प्रस्तुत करते हुए व्याख्या की है, मूल्यांकन किया है और राजस्थानी भाषा विज्ञान की सटीकता एवं सार्थकता को आधिकारिक रूप से अपना निर्णायक मत प्रस्तुत किया है और बताया है कि राजस्थानी भाषाविज्ञान भाषा की उत्पति, इतिहास, भाषा रूप एवं व्याकरण का अध्ययन भाषा रूपी वट वृक्ष है जिसमें ध्वनियों से बने शब्द उसकी शाखाएं हैं, वाक्य उसकी टहनियां हैं और अर्थ इसके फल हैं।

इन अध्यायों के पश्चात मालीजी ने भारतीय आर्य भाषाओं से सम्बन्धित अध्याय को 40 पृष्ठों में प्रस्तुत किया है और बताया है कि प्राचीन भारतीय भाषाएं आर्य भाषा परिवार की ही भाषाएं हैं। इस आर्य भाषा परिवार के अन्तर्गत मालीजी ने लौकिक वैदिक संस्कृत, पाली, प्राकृत, अपभ्रंश आदि भारतीय आर्य भाषाओं का पारस्परिक प्रतिरूप या पर्याय क्या है? इसको विस्तार से बताया है। प्राकृत भाषा का विवरण विस्तार से दिया है।

पुस्तक का दसवां अध्याय राजस्थानी भाषा परिवार को लेकर है। इस अध्याय के शीर्षक से ऐसा लगता है कि राजस्थानी भाषा परिवार में राजस्थानी की बोलियों और उप बोलियों का विवरण दिया गया होगा, लेकिन मालीजी ने राजस्थानी भाषा को भारोपीय परिवार की सप्तम वर्ग की भाषा बताते हुए राजस्थान की शब्दावली को संस्कृत, उर्दू, पारसी, तुर्की, सामी-अरबी, पुर्तगाली, फ्रांसिसी, जापानी, अंग्रेजी, द्रविड़, बंगला आदि भाषाओं की शब्दावली के साथ उनके तत्सम, तद्भव शब्द, व्यंजन के लिप्यन्तर को समझाया है।

राजस्थानी लिपि से सम्बन्धित पुस्तक के ग्यारहवें अध्याय में देवनागरी लिपि की चर्चा की है तथा देवनागरी लिपि में सुधार की आवश्यकता बताते हुए मालीजी ने अपने कुछ सुझाव भी दिये हैं एवं अन्त में लोकभाषा, लोक संस्कृति तथा भाषा के बारे में व्याख्या करते हुए मालीजी ने स्पष्ट किया है कि लोकभाषा में ही भाषाविज्ञान की जड़ें हैं।

इस प्रकार बी. एल. माली 'अशांत' की यह पुस्तक राजस्थानी भाषाविज्ञान को लेकर कुछ सोचने के लिये मजबूर करती है। यह सम्भव है कि इस बारे में राजस्थानी भाषा तथा भाषा विज्ञान के विद्वानों की राय कुछ अलग हो, लेकिन लेखक ने अपने मन की बात को बहुत सलीके के साथ प्रस्तुत कर राजस्थानी भाषाविज्ञान के बारे में कुछ सोचने के लिये बाध्य अवश्य किया है। जय राजस्थान, जय राजस्थानी।

-डॉ. देव कोठारी

पुस्तक - राजस्थानी भाषा विज्ञान, बी. एल. माली 'अशांत', प्रकाशक, राजस्थानी भवन फाउण्डेशन, 113 प्रेमनगर, जगतपुरा गेटौर, जयपुर-302017, पृ. 164, मूल्य 400 रू., संस्करण-2020

वरदा का हीरकामृत विशेषांक

राजस्थान साहित्य समिति, बिसाऊ से प्रकाशित वरदा त्रैमासिक का यह 220 पृष्ठीय अमृत महोत्सव

विशेषांक वर्ष 60 एवं 61 का 8 अंकों का संयुक्त पूर्वार्द्ध अंक है। 60 वर्षीय यह विशेषांक हीरक महोत्सव अंक होना चाहिये था न कि अमृत महोत्सव। अमृत महोत्सव 75 वर्ष होने पर मनाया जाता है।

'वरदा' को डॉ. मनोहर शर्मा ने जनवरी-मार्च 1958 में प्रारम्भ कर जीवन पर्यन्त 1999 तक निकाला। 18 जनवरी 1999 को उनके निधन के बाद यह उत्तरदायित्व डॉ. उदयवीर शर्मा ने वहन किया जो वरदा की स्वस्थ परम्परा का बड़े मनोयोग के साथ निर्वाह कर रहे हैं। देश के उच्चकोटि के विद्वानों के सहयोग के साथ यह पत्रिका साहित्य जगत की अमूल्य धरोहर बनी हुई है। - **डॉ. कहानी भानावत**

डॉ. हेमलता नाहटा की दो गद्यिकाएं

(1) बोन्साई-लेडी

छोटा सा खूबसूरत फूलों से लदा वो बोन्साई का पेड़ हर एक की नजरों में चढ़ा हुआ था। अपनी व्यापकता को इतने से स्वरूप में करीने से सजाने के लिए ना जाने कितनी बार उसकी फैलती भुजाओं को काटछांट उसके सौंदर्य को पाया होगा।

इसे देखकर मेरा ध्यान आज की युवतियों की तरफ चला जाता है। वे खूबसूरत, व्यवस्थित ,काबिल हर क्षण में प्रगति करती हुई, तरक्की के नए इतिहास रच रही हैं। 18वीं व 19वीं सदी की महिलाओं में विद्वता की कोई कमी नहीं थी लेकिन उनकी क्षमता घर तक ही सीमित थी। आज की युवतियाँ घर, पति, बच्चे, दफ्तर तथा अपने दोस्तों के अलावा आर्थिक पहलू से भी परिवार को मजबूत कर रही हैं। उन्होंने सलीके से जीना सीखा है। आंगनवाड़ी से लेकर उड़नतस्तरी तक हर जगह अपनी पहचान का लोहा मनवाया है।

कभी-कभी मर्यादाओं की सीमा से आगे उनके पाँव चले जाते हैं जिससे उनका धरातल डांवाडोल हो जाता है। बोन्साई ने गमले की मर्यादा में ही अपना सर्वांगीण विकास किया है।

बार-बार काटछांट करके उसकी खूबसूरती को निखारा गया है। उसी प्रकार आज की नारी ने बचपन से ही अपना लक्ष्य बनाकर अपनी क्षमता को उसी ओर लगाया है। रास्ते में आने वाली सभी बाधाओं को पार करते हुए उन्होंने अपने अंतिम लक्ष्य को हासिल करके ही दम लिया है। आज उन्हीं विशिष्ठताओं को देखकर मन असीम आनंदित होता है। यदि वे प्रगति के साथ-साथ अपने मौलिक मूल्यों की जमीन से जुड़ी रहेंगी तो जीवन की हर डगर पर फतह निश्चित है।

(2) परछाई

आनंद व विषाद हर व्यक्ति के जीवन में परछाई की तरह होते हैं। आनंद के क्षणों में वह नज़र नहीं आती, विषाद के पलों में वह पीछा नहीं छोड़ती। आनंद अपने साथ सुख की घटाएं बिखेर देता है, तब परछाई उसकी छाया में विलुप्त हो जाती है। दु:ख के पलों में व्यक्ति अकेला हो जाता है तब परछाई ही होती है जो उसका साथ नहीं छोड़ती। वह अपने मन में छिपी हिम्मत को कमजोर नहीं होने देती। संकल्पशक्ति को पुन: मजबूत बनाने में सहायक बन वज्र-सा सहारा देती है।

परछाई गिरे हुए सम्मान व आत्मबल को मजबूत बनाती है। कायराना पूर्ण हरकतों को करने से पूर्व प्रतिछाया बनकर समझाती है कि हे मनुष्य! ईश्वर द्वारा प्रदत्त छाया-रूपी वरदान को हमेशा मुड़-मुड़ कर देखते रहने से जीवन की असलियत का प्रतिबिम्ब परिलक्षित होता रहेगा और तुम्हारा मन कायराना कृत्य करने से कतराता रहेगा।

स्मृतियों के शिखर (106) : डॉ. महेन्द्र भानावत

उज्जैन में सांपों के अनुरागी तुकाराव

सांपों का जिक्र आते ही कालबेलिया समुदाय का स्मरण आना स्वाभाविक है किन्तु और भी समाज और व्यक्ति मिल जायेंगे जो सांपों के घराने लिये हैं। ऐसे भी हैं जो सांप-देवता के मन्दिर में भोपे के रूप में भाव लाकर सर्प-दंशों का इलाज करते हैं तो ऐसे भी मिलेंगे जो शौकिया रूप में सांपों को पालकर उनके अध्ययन-अन्वेषण में रूचि रखते हैं।

भारतीय लोककला मण्डल में जब लोकानुरंजन मेला प्रारम्भ किया तो उसमें प्रतिवर्ष ही राजस्थान तथा अन्य अंचलों के विविध रूपा प्रदर्शनधर्मी कलाकारों को आमंत्रित कर जनरंजन के साथ गहन अध्ययन का भी लक्ष्य रखा जाता। इन मेलों में माध्यम से अनेक कलाकार मेरे सम्पर्क में आये और उनसे मुलाकात कर जो अलभ्य सामग्री मुझे हाथ लगी, उससे मैं आज भी रोमांचित, चकित तथा चमक लिये हूं।

फरवरी 1982 के मेले में उज्जैन से सर्पपालक तुकाराव को आमंत्रित किया जिसने अपने सर्प-प्रदर्शन से लोगों को बड़े अनूठे अजूबों से आश्चर्यचकित कर दिया।

तुकाराम का घराना सांप की सेवा-पूजा का घराना रहा है इसलिए स्वाभाविक है सांप इनके लिए अति प्रिय परिवारी हैं। ये मूलत: ग्वालियर के रहने वाले हैं। एकदिन ग्वालियर में उनके पिता गणपतराव को स्वप्न आया कि कंपूसाब की बगीची में महाकाल की प्रतिमा के वहां सर्प के रूप में मैं मिलूंगा, तुम मुझे पकड़कर रख लेना। तुम्हारे आनन्द ही आनन्द हो जायेगा।

उन्हीं दिनों ग्वालियर सरकार के मोती महल में हजारों रूपयों की थैलियों की थप्पियां रखी जाती थीं। वहां एक भयंकर सांप देखा गया। एक दिन तो वह सांप बिल्ली को निगल गया। सब लोग बड़े चिंतित हुए तब ढींढ़ोरा पिटवाया गया कि जो भी सांप पकड़ेगा उसे अच्छा इनाम दिया जाएगा। कई लोग आये पर सांप पकड़ नहीं पाये। गणपतराव को प्रेरणा हुई तो एकदिन वे पहुंच गये और देखते-देखते उस सांप को पकड़ सरकार के सम्मुख पेश कर दिया। इस पर सरकार जीवाजीराव बड़े खुश हुए। एक हजार रूपया इनाम दिया और पक्का साफा बंधवाया तथा कहा कि आज से यहीं रहकर सर्प-पूजा प्रारम्भ करदो। सरकार का हुक्म सर आंखों पर झेल गणपतराव ने नौकरी प्रारम्भ कर दी।

ग्वालियर सरकार को सांप-नेवले की लड़ाई कराने का बड़ा शौक था। वे सपेरों को अपने यहां बुलवाकर उनका खेल करवाते थे। इसी प्रकार दतिया सरकार को भी सांपों के तमाशों का बड़ा शौक था। एकबार उनके तमाशबीन ने ग्वालियर में सांप लड़ाते समय गणपतराव को कह दिया कि हिम्मत हो तो तुम भी अपने सांप को हमारे नेवले से लड़ादो। उस समय गणपतराव जंगल से अच्छा सांप लाए हुए थे। उन्होंने नेवले से अपना सांप लड़ा दिया। इसमें नेवला हार गया। इससे गणपतराव की प्रतिष्ठा बढ़ गई।

तुकाराव ने बताया कि ऐसे कई किस्से पिताजी के जीवनकाल में हमें देखने को मिले इसलिए कैसा भी सांप हो, हमारे लिए वह फूल बराबर है। घर में तुकाराव के तीन भाई मल्हारराव, भगवतराव और बालाजीराव तथा उनका परिवार, सब रहते हैं। बोले, सांप भी घूमते हैं और हम सभी भी रहते हैं। सांपों से आखिर डर लगे तो क्यों लगे? वे हमारा कुछ बिगाड़ते भी तो नहीं।

तुकाराव ने बताया, सांप हमारे देवता हैं। उनके दर्शन कभी अमंगलकारी नहीं हैं। यदि ऐसा होता तो हमारी स्थिति आज क्या होती पर भगवान की दया है। ये सांप देवता ही हमें सुख-शान्ति दिये हैं। सांप देवता को तुकाराव जब-जब भी अपनी मटकियों से निकालते हैं, उन्हें हाथ जोड़ नमर करते हैं। जब उन्हें मटकी में बन्द करते हैं तो ढक्कन लगाकर बांध देते हैं, तब भी नमन करते हैं। यही नहीं, वे सांप को कभी ओछे वचन भी नहीं बोलते। हमेशा 'आप' कहकर संवाद करते हैं।

तुकाराव ने बताया कि सांप काटने से जो मृत्यु होती है वही सबसे अच्छी मृत्यु है। सांप के काटने से व्यक्ति को कोई पीड़ा नहीं होती अपितु एक आनन्द देने वाला नशा आता है। सांप का जहर और खून दोनों मीठे होते हैं और यही अमृत है। उन्होंने बताया कि सांप काटा अकाल मृत्यु की योनि में जाता है जिसे भूता योनि कहते हैं। यह एक हजार वर्ष की होती है। इस योनि में जाने वाले को कुछ ऐसा महसूस होता है जैसे वह न जीने में है न मरने में।

तुकाराव ने सांपों की कई किस्में बताईं। उन्होंने कहा कि खास सांप तो तक्षक है जिसे कालगंडेश भी कहते हैं। भैंसाडोमी, फूलफूंकार, रंगतबंसी, इच्छाधारी, तामड़ा, घोड़ा पछाड़, चीतल आदि अन्य किस्में हैं। दौड़ने में सबसे तेज घोड़ापछाड़ होता है। इसे धावन भी कहते हैं। एक तीन फन वाला सांप होता है। यह एक हजार वर्ष की उम्र भोगकर मलयागिर जाता है। वहां रह फिर इच्छाधारी बन जाता है। यही सांप बदन में बोलता है।

सांप की पहचान उसे पकड़ने पर हो जाती है। सांप प्राय: बरसात में अधिक निकलता है। पहली बरसात, दूसरी और तीसरी बरसात में निकलने वाले सांपों की उस ढंग से पहचान हो जाती है। महीना भी सांप को पहचानने में मदद करता है। यदि किसी सांप को हाथ में लेने पर उससे बदबू आने लगे तो समझ लिया जाता है कि वह अधोगति सांप होगा। सांप को जलाने से वह अपनी योनि से मुक्त हो जाता है। उसकी हड्डी से दवाई बनाई जाती है।

सांप बहुत बुरे ढंग से किसी के पीछे पड़ता है। यह बहुत लम्बे समय तक बिना खाये-पीये रह सकता है। तुकाराव ने बताया कि कालपात्र की तरह किसी अष्टधातु के घड़े में यदि सांप को बंदकर जमीन में गाड़ दिया जाय और साल भर बाद पुन: निकाला जाय तो भी वह जीवित मिलेगा।

तुकाराव के बड़े भाई सांपों के इतने अभ्यस्त और उस्ताद हैं कि आंख पर पट्टी बांधकर सांप का चुम्मा ले लेंगे। वे सांप को फूंकते हैं। फुसकार मारते हैं। फूंक सीधी सांप की आंखों में चली जाती है मगर क्या मजाल कि सांप देवता कुछ अनिष्ट करदें। नागपंचमी पर ये सांपों को नहला-धुलाकर पूजा करते हैं और दूध पिलाते हैं। कभी घर के बाहर ले जाते हैं तब भी सांप देवता को नहलाते हैं। तिलक-छापा करते हैं। हल्दी, कुंकुम लगाते और हार पहनाते हैं। उनका कहना है कि सांप के साथ वे 70 घण्टे तो क्या 700 घण्टे रह सकते हैं। उज्जैन में प्रतिवर्ष डॉ. शिवमंगलसिंह 'सुमन' से नागपंचमी को जन्मदिन पर उनके घर जाकर उनसे सर्प-पूजा करवाते हैं। उज्जैन में तुकाराव अब सांपों का एक बड़ा संग्रहालय खोलने की धुन लिये हैं। कला मण्डल से उन्हें बड़ी प्रेरणा मिली है। उनके छह वर्षीय पुत्र मनोज ने भी सांपों के खुले प्रदर्शन से यहां बड़े कमाल दिखाये हैं।

मेले के बाद 09 अगस्त को उदयपुर की कालबेलिया कॉलोनी में रहने वाला सर्पपालक गणेशलाल दलीवाल संग्रहालय देखने आया। इस दौरान सांप सम्बन्धी पूछताछ करने पर उसने बताया कि सांपों के अनेक प्रकार होते हैं। बड़ेरों के पास तो जानकारी का भण्डार था।

वे कहा करते कि जिस पतले सांप को हम नाक में डालकर मुंह से निकाल लेते हैं वह वीरताकलो होता है। एक बरसाती होता है जिसे आयल कहते हैं। एक काकीटो बड़ा जहरीला होता है। यों सांप के पांव नहीं होते पर काकीटो के चार पांव होते हैं। यह ऊंट की तरह झोला खाता चलता है। इसके पूंछ होती है। गिरगिट जैसा यह सांप जितने वर्ष के रोगी को काटता है, रोगी उतने ही दिन जिन्दा रहता है। यह उड़ता नहीं पर वृक्ष पर चढ़ जाता है। एक और चोकड़ो सांप भी जहरडंकी होता है। अधिकतर पानी में और कुछ समय रेती पर रहने वाला। इसके टुकड़े कर दो तो भी यह मरता नहीं है। एक हरियल होता है। धारियावाला सांप काल गींडायचो कहलाता है। एक चीतल होता है अजगर जैसे छाबके वाला।

अजगर की बात चली तो गणेशलाल बोले, वैसे अजगर जहरीला होता है पर सिन्दूर जैसी टींकी वाला देवासी न काटता है और न पकड़ में ही आता है। कुंकुम व तिलकधारी भी जहरीले नहीं होते किन्तु जिसके माथे पर रामदेवजी के दो पगल्ये, सरे गाय की खुरी, कुंकुम के दो तिलक या फिर पूरे शरीर पर धणियां अर्थात् टिपकियां होती हैं वे जहरीले होते हैं। काटते ही लिपट जाते हैं और जोर लगाकर हड्डी तक तोड़ देते हैं।

गणेशलाल ने बताया कि ये सारे सांप हैं। इनमें से कोई भी पूंगी पर नहीं आयेगा। पूंगी पर आने वाला सांप नहीं, हांप होता है। हम लोग सांप कभी नहीं मारते बल्कि हाथ से, इशारे से पकड़ लेते हैं। मुंह की ओर से पकड़कर मुंह बन्द कर जहर होने पर उसकी पोटलियां जड़ामूल से खींच लेते हैं ताकि जहर पैदा ही नहीं हो।

अपने घर में मंत्र द्वारा उसके कार बनाकर खुला छोड़ देते हैं। कार वह लांघकर बाहर नहीं आ सकता। लछमणजी भी सीतामाता के कार लगाकर गये पर कार-कार में फर्क होता है। उस कार से भी सीतामाई को बाहर नहीं निकलना था पर निकल गई तो फल भुगतना पड़ा।

मणिधारी सांप हजारों में एक होता है। यह कई वर्षों तक जीवित रहता है। इससे जुड़ा एक किस्सा सुनाता गणेशनाथ बोला, आकोला के मगरे में मणिधारी का पता चलने पर दो कालबेलिये पकड़ने पहुंचे। एक बिल देख उन्होंने पूंगी बजाई तो बांबी से सांप निकला। निकलते ही ऐसी फूंकार मारी कि दोनों कालबेलिये बेहोश हो गये। सांप पुन: बांबी में घुस गया।

एक दूसरे कालबेलिये को पता चलने पर उसने यह घटना लोगों को सुनाई तो भीड़-पर-भीड़ इकट्ठी हो गई। सांप मारना जरूरी था। एक युक्ति सूझने पर उस कालबेलिया ने कुम्हारों के घरों से कच्ची ईंटें मंगवाकर बांबी के पास एक-एक कर सात डोल्यां बना जोर से पूंगी वादन किया।

इससे घबराकर सांप बाहर निकला और गुस्से में भर जोर की ऐसी फूंकार मारी कि उसके जहर के ताप से छह डोलियां पक गईं। सातवीं कच्ची रह गई। सांप थककर निढाल हो गया। यह देख उस कालबेलिये ने उसे पकड़ बोरी में बन्द कर दिया।

रात को सांप आकोला ठाकुर के सपने गया और बोला, मैंने कोई अपराध नहीं किया। बेकसूर होकर भी मुझे एक कालबेलिये ने पकड़कर कैद कर रखा है। वहां मैं घबरा रहा हूं सो मुझे मुक्ति दिलायें। ठाकुर साहब अनजान थे।

सुबह आदमी दौड़ाकर पता लगवाया तो वे कालबेलियों के डेरे पहुंचे। कालबेलियों ने मना कर दिया। एक-एक कर जितने भी सांप थे, ठाकुर साहब के सामने रख दिये पर मणिधारी नहीं पाकर ठाकुर साहब डेरे के भीतर पहुंच गहरी छानबीन करने लगे तो पता चला कि एक खटोल्ये के नीचे खड्डे में उसे छिपा ऊपर पत्थर रखा हुआ था।

ठाकुर साहब ने पत्थर हटाया तो नीचे रखे सांप की छाया मात्र से उनके बाल मेहंदी जैसे हो गये। उन्होंने तत्काल उस कालबेलिये को पन्द्रह बीघा जमीन और सरकारी बावड़ी दान में दी। कालान्तर में वहां एक गांव बसा जो मेवाड़ के उदयपुर जिले में डूंगला नाम से जाना जाता है। वह बावड़ी भी वहां मौजूद है।

शब्द रंजन

उदयपुर, मंगलवार 01 सितंबर 2020

सम्पादकीय

मानव प्रकृति के आगे या पीछे

सृष्टि के प्रारंभ में तो प्रकृति ही सबकुछ थी। धीरे-धीरे कई चरणों में होते-होते मनुष्य का स्वरूप सामने आया। उसने भी शनै:-शनै: विकास करते-करते अपने मस्तिष्क को निरंतर क्रियाशील बनाते जो उन्नति-प्रगति की और जिन रहस्यों का उद्घाटन किया उससे जितनी बार दांतों तले ऊंगली दबाओ, कम ही है।

खोज का यह सिलसिला कभी थमने वाला नहीं है फिर भी कहते हैं प्रकृति तो प्रकृति है। मनुष्य कितनी ही कोशिश करे तब भी प्रकृति के रहस्य कभी खुल नहीं पायेंगे और मनुष्य भी चुप बैठने वाला नहीं है।

यह भी कि ज्यों-ज्यों मनुष्य प्रकृति के रहस्यों की परतें खोलेगा त्यों-त्यों उसे मात खानी पड़ेगी। वर्तमान में कोरोना का कहर पूरे विश्व में तबाही मचा रहा है और फिर हर तरफ जलप्लावन। लोग तो कहते भी हैं प्रकृति के साथ जितनी ज्यादती होगी, मनुष्य को भुगतने के लिए भी तैयार रहना होगा।

मनुष्य यदि प्रकृति के साथ अति करना छोड़ दे तो प्रकृति मातृवत उसकी रक्षा ही करती है पर वह जब अपने अहम को गलाना नहीं चाहेगा तो उसे दुर्दिन देखने ही पड़ेंगे। एक सीमा तक प्रकृति ही सबकी नियामक है और वह स्वयं उत्कृष्ट चिकित्सक भी। आज भी एक सीमा तक डाक्टर इलाज करते हैं बाकी प्रकृति ही मनुष्य को स्वस्थ तथा चंगी करती है। इसलिए जरूरी है कि मनुष्य 'प्रकृति पुरुष' बनकर अपनी सीमा को पहचाने और तदनुरूप आचार-विचार रखते व्यवहार करे। प्रकृति की दृष्टि में कोई छोटा-बड़ा, ऊंचा-नीचा, कमतर-अधिकतर नहीं है।

ये टीवी चैनल हैं या 'मूरख-बक्से' ?

-डॉ. वेदप्रताप वैदिक-

जब मैं अपने पीएच.डी. शोधकार्य के लिए कोलंबिया युनिवर्सिटी गया तो पहली बार न्यूयार्क में मैंने टीवी देखा। मैंने मेरे पास बैठी अमेरिकी महिला से पूछा कि यह क्या है तो वे बोलीं, यह 'इडियट बॉक्स' है याने 'मूरख बक्सा'! अर्थात यह मूर्खों का, मूर्खों के लिए, मूर्खों के द्वारा चलाए जाने वाला बक्सा है। उनकी यह टिप्पणी सुनकर मैं हतप्रभ रह गया लेकिन मैं कुछ बोला नहीं।

आज भी मैं उनकी बात से पूरी तरह सहमत नहीं हूं लेकिन भारतीय टीवी चैनलों का आजकल जो हाल है, उसे देखकर मुझे मदाम क्लेयर की वह सख्त टिप्पणी याद आ रही है। फिल्म कलाकार सुशांत राजपूत की हत्या हुई या आत्महत्या हुई, इस मुद्दे को लेकर हमारे टीवी चैनल लगभग पगला गए हैं। उन्होंने इस दुर्घटना को ऐसा रुप दे दिया है कि जैसे महात्मा गांधी की हत्या से भी यह अधिक गंभीर घटना है। पहले तो सिने-जगत के नामी-गिरामी कलाकारों और फिल्म-निर्माताओं को बदनाम करने की कोशिश की गई और अब सुशांत की महिला-मित्रों को तंग किया जा रहा है।

सारी दुनिया को, चाहे वह गलत ही हो, यह पता चल रहा है

कि सिने-जगत में कितनी नशाखोरी, कितना व्यभिचार, कितना दुराचार और कितनी लूट-पाट होती है। ऐसे लोगों पर दिन-रात ढोल पीट-पीट कर ये चैनल अपने आप को मूरख-बक्सा नहीं, महामूरख-बक्सा सिद्ध कर रहे हैं। वे अपनी इज्जत गिरा रहे हैं। वे मजाक का विषय बन गए हैं। एक-दूसरे के विरुद्ध उन्होंने महाभारत का युद्ध छेड़ रखा है। उनकी इस सुशांत-लीला के कारण देश के राजनीतिक दल भी अशांत हो रहे हैं। वे अपने स्वार्थ के लिए सिने-जगत की प्रतिष्ठा को धूमिल कर रहे हैं। उनका स्वार्थ क्या है, उन्हें सुशांत राजपूत से कुछ लेना-देना नहीं है। उनका स्वार्थ है— अपनी दर्शक-संख्या (टीआरपी) बढ़ाना लेकिन अब दर्शक भी ऊबने लगे हैं।

इन चैनलों को कोरोना से त्रस्त करोड़ों भूखे और बेरोजगार लोगों, पाताल को सिधारती अर्थ-व्यवस्था, कश्मीर और नगालैण्ड की समस्या और भारत-चीन तनाव की कोई परवाह दिखाई नहीं पड़ती। यों भी पिछले कुछ वर्षों से लगभग सभी चैनल या तो अखाड़े बन गए हैं या नौटंकी के मंच! पार्टी-प्रवक्ताओं और सेवानिवृत्त फौजियों को अपने इन दंगलों में झोंक दिया जाता है। किसी भी मुद्दे पर हमारे चैनलों पर कोई गंभीर बहस या प्रामाणिक बौद्धिक विचार-विमर्श शायद ही कभी दिखाई पड़ता है। इन चैनलों के मालिकों को सावधान होने की जरुरत है, क्योंकि वे लोकतंत्र के सबसे मजबूत चौथे खम्भे हैं।

असामयिक निधन से अपूरणीय क्षति

भास्कर जीएम विजय शर्मा को पितृशोक :

दैनिक भास्कर, उदयपुर के जीएम विजय शर्मा के पिता 79 वर्षीय प्रकाश नारायण शर्मा का 27 अगस्त को निधन हो गया। झोटवाड़ा, जयपुर के मोतीनगर स्थित मोक्षधाम पर उनका अंतिम संस्कार किया गया। उनके पीछे पत्नी रमा शर्मा, पुत्र अजय, विजय एवं भात भूषण तथा दो पुत्रियां हैं। डॉ. तुक्तक भानावत ने बताया कि पत्रकार संगठन जर्नलिस्ट एसोसिएशन ऑफ राजस्थान (जार) की उदयपुर इकाई द्वारा श्रद्धांजलि देकर मृतात्मा की शांति के लिए प्रार्थना की गई।

जैनदर्शन के विद्वान नानालाल पीतलिया की देवलोक प्राप्ति :

कानोड़ निवासी जैन साहित्य, धर्म और दर्शन के विद्वान नानालाल पीतलिया का 29 अगस्त को 89 वर्ष की उम्र में निधन हो गया। डॉ. सतीश मेहता ने बताया कि नायब तहसीलदार से सेवानिवृत्त होने के पश्चात अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ बीकानेर कार्यालयाध्यक्ष रहे। उदयपुर के गणेश जैन छात्रावास में गृहपति के रूप में भी उनकी सेवाएं सराहनीय रहीं। डॉ. दिलीप धींग के अनुसार पीतलियाजी बड़े साधुमना सहज तथा सादा जीवन उच्च विचार के पोषक थे। जैन साहित्य, संस्कृति और समाजधर्म में उनकी गहरी पैठ थी। शब्द रंजन द्वारा आयोजित श्रद्धांजलि में प्रो. धनेश भाणावत, देवीलाल चावत, डॉ. महेंद्र, डॉ. तुक्तक, डॉ. कविता, डॉ. कहानी तथा दिनेश कुदाल ने पीतलियाजी का स्मरण करते उन्हें जैन आचार-विचार और संस्कार का सुधिजन बताया।

वरिष्ठ पत्रकार वशिष्ठकुमार नहीं रहे :

जयपुर के वरिष्ठ पत्रकार वशिष्ठकुमार शर्मा का 30 अगस्त को निधन हो गया। वे काफी समय से बीमार चल रहे थे। वे अपने पीछे धर्मपत्नी गीतादेवी, दो पुत्र मनोज तथा अरूण एवं दो पुत्रियां सुलोचना तथा अर्चना समेत भरापूरा परिवार छोड़ गये हैं। मनोज आईएएस तथा अरूण सूचना एवं जनसंपर्क विभाग में संयुक्त निदेशक हैं। गांधीवादी व्यक्तित्व के धनी वशिष्ठजी ग्रेट राजस्थान के संपादक रहे। उन्होंने लंबे समय तक पत्रकारों के लिए संघर्ष किया। उनके निधन पर पत्रकारों ने शोकांजलि व्यक्त की।

साहित्यिक पत्रकारिता के जुगल परिहार का परलोकगमन :

जोधपुर के प्रसिद्ध साहित्यकार एवं पत्रकार जुगल परिहार का 31 अगस्त को 68 वर्ष की उम्र में निधन हो गया। उन्होंने राजस्थानी मासिक 'माणक' के माध्यम से लंबे समय तक राजस्थानी भाषा, संस्कृति, जनजीवन तथा राजनैतिक हलचल की दूर-दूर तक की अपनी संपादन कला का परचम दिया। माणक के संस्थापक पदम मेहता ने उनकी सेवाओं को राजस्थानी पत्रकारिता तथा माणक के लिए ऐतिहासिक मूल्यों की स्थायी देन बताते युवा साथियों को प्रेरणा लेने का जिक्र किया। किशन दाधीच के अनुसार परिहार ने राजस्थानी भाषा की मान्यता के लिए हर संभव कोशिश की। वे एक सफल समालोचक, कवि और सबके स्नेहशील मित्र थे। एक सप्ताह पूर्व उन्हें कोरोना की चपेट में आने के बाद एमजीएच में भर्ती कराया गया। जांच में वे पॉजिटिव पाये गए। उनका अंतिम संस्कार स्वर्गाश्रम में किया गया। शब्द रंजन परिवार की उन्हें श्रद्धांजलि।

साध्वीश्री मधुबाला के सान्निध्य में सांवत्सरिक सप्ताह

उदयपुर (विज्ञप्ति)। महाप्रज्ञ विहार में तेरापंथ धर्मसंघ की सुविज्ञा साध्वी शासनश्री मधुबालाजी ने सांवत्सरिक सप्ताह के दौरान अपने उद्बोधन में क्रमश: खाद्य संयम दिवस, स्वाध्याय दिवस, सामायिक दिवस, वाणी संयम दिवस, अणुव्रत चेतना दिवस, जप दिवस, ध्यान दिवस, संवत्सरी महापर्व तथा क्षमापना दिवस पर प्रतिदिन सारगर्भित प्रवचन दिया।

साध्वीश्री मधुबालाजी ने अणुव्रत चेतना दिवस पर बोलते कहा कि आचार्यश्री तुलसी ने मानव जाति के लिए अणुव्रत के रूप में एक विशिष्ट अवदान दिया। अणुव्रत अन्तर चेतना के जागरण का उपक्रम है। हमारे जीवन में धर्म के साथ व्यवहार शुद्धि होनी चाहिये। यदि हमारा व्यावहारिक धरातल शुद्ध नहीं हो तो हम अध्यात्म को नहीं साध सकेंगे।

नवनिर्वाचित अध्यक्ष अर्जुन खोखावत ने बताया कि साधवीश्री ने कहा कि जब देश आजादी के गीत गा रहा था तब आचार्यश्री तुलसी का ध्यान भौतिकता की चकाचौंध से परे चारित्रिक उन्नयन हेतु अणुव्रत की ओर गया। फलत: एक आंदोलन का निर्माण हुआ। अणुव्रत हर आदमी का विकासशील व्रत है। अत: अणुव्रती बनना हर गृहस्थ का नैतिक कर्तव्य है।

ध्यान दिवस पर साध्वीश्री मधुबालाजी ने कहा कि ज्ञान के लिए ध्यान आवश्यक है और ध्यान के लिए ज्ञान आवश्यक है। प्रकृति की दृष्टि से दोनों एक हैं और प्रक्रिया की दृष्टि से दोनों दो हैं। ज्ञान में चल अंश विद्यमान है और ध्यान में स्थिर अंश। चंचलता जितनी सहज है, स्थिरता उतनी सहज नहीं है। शरीर, वाणी और मन के साथ चलने का जन्मसिद्ध अभ्यास है किंतु शरीर, वाणी और मन से परे जाने का अभ्यास नहीं है। साधवीश्री के अनुसार परम शक्ति के जागरण का एक महत्वपूर्ण उपक्रम है ध्यान।

आचार्यश्री तुलसी की शासना में आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने गहन अध्ययन और गहन साधना से प्रेक्षाध्यान के रूप में जैन योग की विलुप्त साधना पद्धति को पुनर्जीवित किया। प्रेक्षाध्यान की आज एक प्रतिष्ठित ध्यान पद्धति के रूप में देश-विदेश में व्यापक पहचान है। हमें यह संकल्प लेना चाहिये कि हम कम से कम आधा घंटा हर रोज ध्यान करेंगे।

संवत्सरी के पर्व पर अपने प्रवचन में साध्वीश्री ने संवत्सरी को महास्नान का पर्व बताते इसे महाकुंभ स्नान कहा। अंत:करण की व्याधियों और मनोकायिक बीमारियों की शुद्धि के लिए चिकित्सा का पर्व, स्वास्थ्य की सुरक्षा के लिए तथा भविष्य की प्रतिबद्धता के लिए कार्य-सिद्धि का पर्व कहा। साधवीश्री ने कहा कि सामाजिक संपर्कों में जाने वाले हर व्यक्ति में प्रियता और अप्रियता का भाव न आए, यह कम संभव है।

संवत्सरी क्षमा के आदान-प्रदान का पर्व है। क्षमा का अर्थ सहिष्णुता है। यदि सहिष्णुता की शक्ति का विकास नहीं होता तो आदमी क्षमा करके भी क्षमा का लाभ नहीं उठा पाता। साध्वीश्री ने स्पष्ट किया कि संवर, संयम, जप, ध्यान, स्वाध्याय आदि के साथ आत्ममंथन आगे बढ़ता है। श्रद्धा-भक्ति का बल इसे वेग देता है। राग-द्वेष की गांठें खुलती हैं। प्राणी मात्र के साथ मैत्री का अनुभव होता है। इस भूमिका तक पहुंचने का एक ही माध्यम महापर्व संवत्सरी है।

अंतिम दिन क्षमापना दिवस पर साध्वीश्री मधुबालाजी ने कहा कि 'क्षमा वीरस्य भूषणम्' और मित्ति में सव्वभूएसा' अर्थात् सबके साथ मेरी मैत्री है। वैर किसी के साथ नहीं है। यह मैत्री केवल मनुष्य के साथ ही नहीं, सभी सजीव प्राणियों के साथ मैत्री रखना हमारे कर्तव्य के अंतर्गत आता है। अपने व्याख्यान में साधवीश्री ने कहा कि क्षमा का परिणाम मैत्री है। एक व्यक्ति सहन करना नहीं जानता।

भूलना भी नहीं जानता। उसमें नितिक्षा भी नहीं और परिस्थितियों को झेलने की क्षमता भी नहीं है, ऐसी स्थिति में वह मैत्री का विकास कभी नहीं कर सकता। मैत्री तभी संभव है जब व्यक्ति भूलना जानता है और सहन करना भी जानता है। भगवान महावीर के जीवन में अनेक कष्ट आए। उन्होंने उनको सहन किया क्योंकि उनके भीतर मैत्री का विकास हो गया था। क्षमायाचना दिवस के दिन हम एक-दूसरे को क्षमा करें किन्तु यह क्षमा सिर्फ शाब्दिक नहीं अपितु भावनात्मक होनी चाहिये।

खोज-खबर

ढाई दिन की बादशाहत की याद

यों तो हर संख्या का अपना स्वतंत्र महत्त्व है पर ढाई दिन की संख्या का विशेष यादगार महत्त्व है। अजमेर का ढाई दिन का झोंपड़ा तो प्रसिद्धि के चरम पर पहुंचा हुआ है पर ब्यावर में ढाई दिन की स्मृति में मनाये जाने वाले मेले की खूबी ही कुछ और है।

यह मेला वहां के जनजीवन की अपार खुशी, भाईचारा, सौहार्द और पर्व का प्रतीक ही बना हुआ है जो पिछले दो सौ वर्षों से धुलण्डी के एक दिन बाद मनाया जाता है।

कहा जाता है कि एकबार शिकार के उद्देश्य से मुगल बादशाह अकबर जंगल में गए मगर रास्ता भटक गये। उनके साथ सेठ टोडरमल थे। जंगल में उनकी डाकुओं से मुठभेड़ हुई। टोडरमल के वाक्चातुर्य से डाकू प्रभावित हुए जिसके कारण वे लूटपाट नहीं कर सके और न बादशाह के साथ अभद्र व्यवहार हो पाया। बादशाह टोडरमल की होशियारी और चालबाजी से बड़ा प्रभावित हुआ।

इस उपलक्ष्य में बादशाह ने टोडरमल को ढाई दिन की बादशाहत बख्शी। बादशाह बने टोडरमल ने ढाई दिन में जनता जनार्दन के साथ बड़ी हमदर्दी और आत्मीयता के साथ-साथ अपने खजाने का काफी धन जयरतमंद लोगों को लुटा दिया।

प्रसिद्धि है कि टोडरमल अग्रवाल था और बीरबल का खास मित्र था। बीरबल अकबर के दरबार में नौ रत्नों में से एक था जो हर समय अकबर के साथ रहता और हर समय बादशाह को खुशमिजाज रखता था। उसकी हंसी-दिल्लगी से पूरा राजदरबार मनोरंजित रहता। आज भी जन-जन में अकबर-बीरबल के अनेक किस्से प्रचलित हैं।

प्रो. जगमलसिंह ने बताया कि ब्यावर में जो मेले का आयोजन होता है वह सवारी के रूप में जाना जाता है। उस समय जो सवारी निकली उसमें बादशाह बने सेठ टोडरमल ने सोने की अशर्फियां लुटाई थीं किन्तु अब जो बादशाह का किरदार निभाता है वह मनों गुलाल लुटाता है। मजे की बात यह है कि यह गुलाल प्रत्येक व्यक्ति बादशाह से खर्ची के रूप में प्राप्त कर उसे अशर्फी की तरह ही संभालकर तिजोरी व दुकान के गल्ले में सुरक्षित रखता है और इससे कारोबार तथा परिवार में वृद्धि, सुख-समृद्धि की बढ़ोतरी मानता है। बादशाह आज भी टोडरमल का प्रतीक अग्रवाल समाज का व्यक्ति बनता है जबकि बीरबल ब्राह्मण समाज का व्यक्ति होता है।

गोविन्दप्रसाद अग्रवाल के अनुसार यह मेला 1851 से प्रारम्भ हुआ। बादशाह को सजाने-संवारने का कार्य माहेश्वरी समाज के लोग करते हैं। भांग युक्त ठंडाई पिलाने का जिम्मा जैन समाज के निर्देशन में रहता है। सवारी के आगे नृत्य करते हुए ब्राह्मण समाज का व्यक्ति चलता है। मेले में लगभग डेढ़ सौ किलोमीटर आसपास के क्षेत्रों से ग्रामीण अंचलों से लोग समूहबद्ध ढोल-चंग की थाप पर नाचते-गाते अपनी उपस्थिति में मेले की रौनक द्विगुणित किये रहते हैं।

प्रारम्भ में दो बादशाह बनते जो दो सजीधजी पालकियों में निकलते। इसके आगे बीरबल नाचता हुआ चलता था। आदमी ही नहीं, औरतें भी अपनी-अपनी खिड़कियों, छज्जों तथा झरोखों से गुलाल उछालती।

यह सवारी डिक्शन साहब की छतरी से प्रारम्भ होकर कचहरी जाकर विसर्जित होती। लोकजीवन में ऐसे और भी जनरंजनपरक सवारी जुलूस के विशिष्ट आयोजन प्रचलित हैं जिनके पीछे अति विशिष्ट व्यक्तियों की यादगार जुड़ी मिलती है।

भीलवाड़ा के माण्डल कस्बे में बादशाह शाहजहां की याद में नारों यानी शेरों का स्वांग निकलता है। मुगल बादशाह शाहजहां जब उदयपुर से लौट रहा था तो कुछ समय माण्डल में विश्राम किया था। वहां के डॉ. जमनेशकुमार ओझा ने बताया कि चैत्र कृष्णा त्रयोदशी यानी तेरस को चार व्यक्ति शेर बनकर स्वांग निकालते हैं। चारों अपने पूरे शरीर को शेर की तरह सजाते हैं। इनके सिर पर सींग लगे होते हैं। इनके साथ भील तथा मीणा लोग शिकारी के रूप में अपने हाथों में तीर-कमान लिये होते हैं। मैंने इन दोनों के आयोजनों पर पांच दशक पूर्व लिखा था।

दूध-दही का चढ़ावा

देवी-देवताओं की खाद्य सामग्री में शाकाहार और मांसाहार दो भिन्न आहार तो होते ही हैं पर कुछ ऐसे देव-देवी होते हैं जो एकाहारी होते हैं। एक पदार्थ के अलावा उन्हें दूसरा नहीं कलपता। यह पदार्थ मात्र पेय पदार्थ भी हो सकता है। कुछ केवल दूध पर आश्रित रहते हैं तो कुछ केवल दही पर।

मारवाड़ जंक्शन के पास बिजलियावास गांव में करणी माताजी के मंड पर दूध चढ़ाया जाता है। यह प्राय: सुबह ही चढ़ाया जाता है पर यदि कोई गाय-भैंस सुबह दूध नहीं देकर एक ही समय संध्या को दूध देती है तो ऐसी स्थिति में संध्या को भी दूध चढ़ाया जाता है। जितना भी दूध चढ़ावे में आता है वह वापस बांट दिया जाता है। यह दूध जिन-जिन घरों में सवासणियां (कुंवारी कन्याएं) होती हैं उन-उन को पहुंचा दिया जाता है।

दूध देने की प्रारम्भ में अधिक मात्रा थी जब अधिक दूध चढ़ता था। प्रारम्भ में कांसी का तासक भरकर दिया जाता था। उसके बाद यह मात्रा कुछ कम हो गई तब अदोली भर कर दिया जाने लगा। वर्तमान में टीपर्‌या भर कर दिया जाता है। दूध की आवक और लड़कियों की संख्या के अनुसार यह मात्रा बढ़ती-घटती रहती है।

भारतीय लोककला मण्डल के संग्रहालय में आये एक दर्शक ने 05 अक्टूबर 1983 को बताया कि इस गांव में यह प्रथा केवल चारणों में ही प्रचलित है। यह दूध प्रत्येक माह में शुक्ल पक्ष की सप्तमी और चतुर्दशी को चढ़ाया जाता है।

इधर उदयपुर की ओर डांगियों का गुड़ा गांव में दीवाली के दूसरे रोज खेंखरे पर खाकलजी को दही चढ़ाया जाता है। प्रत्येक दोजारू के घर से एक-एक जावणी चढ़ती है। फिर सब लोग दोने लेकर वहां पहुंचते हैं जिन्हें चढ़ा हुआ दही वितरित कर दिया जाता है। इसी दिन पूरा गन्ना अथवा गट्ठर की भारी चढ़ाई जाती है। यह खेत से लाया पहला चढ़ावा होता है।

यहां चढ़ावे के बाद ही गन्ना अन्यत्र काम में लिया जाता है। इन खाकलजी (धर्मराजजी) को दारू की छांट तक नहीं लगती है। केसर, केवड़ा, गुलाब की पत्तियां चढ़ती हैं। पाती मांगी जाती है। यहां डांगियों की बस्ती अधिक है। भोपा भी डांगी ही है। इसी के पास सिंयालपुरा गांव में दशहरे को खाकलदेवजी को दही और गन्ना चढ़ाया जाता है।

मूठ की झपट

कोटा से पांच किलोमीटर दूर भदाणा माता एक चमत्कारिक देवी का स्थान है जहां कई तरह की बीमारियों का इलाज होता है पर खासकर मूठ की झपट में आये व्यक्ति को मृत्यु के मुख में जाने से बचाया जाता है।

माताजी का भाव आने से पूर्व भोपा देवी की जोत करता है और उससे अपनी आंखों में काजल डालता है। टींकी करता है तब एक व्यक्ति उसे साड़ी ओढ़ा देता है और देवी का भाव प्रारम्भ हो जाता है। फिर जितने भी जात्री वहां आये होते हैं उनमें से जिसका इलाज सबसे पहले करना होता है, देवी-भोपा उसका नाम पुकारता है।

कोटा निवासी राजेन्द्रसिंहजी बारहठ ने 10 अक्टूबर 1983 को बताया कि जब वे देवी के दर्शनार्थ गये तो जात्रियों की भीड़ में से भोपे ने आवाज लगाई, 'झालावाड़ की तरफ के कहां हैं ?' तब एक बारह वर्ष का बच्चा उठा और देवी के सम्मुख हाजिर हुआ। उसका शरीर बुरी तरह जलन मार रहा था। खूब इलाज करवाया गया मगर उसके कोई आराम नहीं पड़ा। भोपे ने कहा, 'छोरा मूठ में आ गया है। दरअसल मूठ डाली तो किसी दूसरे पर गई थी पर यह छोरा उसकी झपट में आ गया।'

उसी वक्त भोपे ने उस लड़के के दोनों पांवों के घुटने चूसे और मुंह से उड़द-मूंग निकाल कर बाहर फैंके। फिर दोनों हाथों की कुहनियां चूसी और उनसे भी उड़द-मूंग निकाल कर सबको बताये। इसके बाद भोपे ने कहा कि सामने जो भैरूजी हैं उन्हें बोतल की धार लाकर दो। वे बच्चे की रक्षा करेंगे। तब पास ही के भदाणा गांव से शराब की बोतल मंगवाई गई और भैरूजी को उसकी धार दी गई। देखते-देखते उस लड़के की बेचैनी जाती रही। जलन मिट गई और वह अपने को काफी अच्छा महसूस करने लगा।

वह लड़का सम्पन्न राजपूत घराने का था अत: उसके पिता को सवामणी परसादी कर लोगों को जीमाने को कहा गया और एक मण मक्की कबूतरों को डालने का आदेश दिया गया। फिर एक महीने बाद देवी के दर्शन करने को कहा गया। एक माह बाद फिर वही लड़का लाया गया तब उसकी गर्दन चूस कर वहां से उड़द-मूंग बाहर निकाल कर उनको जला दिये गये। उसके बाद स्थायी रूप से वह लड़का स्वस्थ हो गया। आज भी वह स्वस्थ एवं मस्त है। **-डॉ. महेंद्र भानावत**

कर्ज देने के लिए सेटेलाइट से खेतों की तस्वीर लेगा आईसीआईसीआई बैंक

उदयपुर (विज्ञप्ति)। आईसीआईसीआई बैंक ने कृषि क्षेत्र में ग्राहकों की साख का आकलन करने के लिए पृथ्वी की परिक्रमा करने वाले उपग्रहों से सैटेलाइट डेटा-इमेजरी का उपयोग करने की घोषणा की। एक्जीक्यूटिव डायरेक्टर अनूप बागची ने कहा कि इस तरह आईसीआईसीआई बैंक सैटेलाइट डेटा-इमेजरी का उपयोग करने वाला देश का पहला बैंक बन गया है और दुनिया के कुछ बैंकों में से एक है जिसने किसानों के त्वरित ऋण निर्णय लेने के लिए भूमि, सिंचाई और फसल पैटर्न से संबंधित विभिन्न मानदंडों को सीखने और जनसांख्यिकीय और वित्तीय मानदंडों के साथ समन्वय करने के लिए उपग्रह डेटा का उपयोग किया है।

ट्रॉपिकाना नए रूप में लॉन्च

उदयपुर (विज्ञप्ति)। पेप्सिको इंडिया ने अपने प्रमुख जूस ब्रांड ट्रॉपिकाना को नए रूप में पेश किया है। स्वादिष्ट और ताज़ा ट्रॉपिकाना जूस अब नई और ख़ूबसूरत पीईटी बोतल में उपलब्ध होगा। पेप्सीको इंडिया जूसस के डॉयरेक्टर, विनीत शर्मा ने कहा कि सस्ता और आकर्षक होने के साथ उपभोक्ता के लिए इसको कहीं ले जाना भी आसान होगा। इसके अलावा ट्रॉपिकाना ने एक नया कैंपेन 'हवाबाज़ी गॉन, असली ऑन' भी पेश किया।

वेदांता पूरे देश में ग्रासरूट फुटबाल डेवलपमेंट प्रोग्राम को फैलाने की तैयारी में

उदयपुर (विज्ञप्ति)। जावर स्थित जिंक फुटबाल अकादमी की सफलता के बाद वेदांता अब अपने फुटबाल प्रोग्राम को ओडिशा के साथ-साथ देश के अन्य हिस्सों में विस्तार देने पर विचार कर रहा है। यह बात वेदांता स्पोर्ट्स के अध्यक्ष अनन्य अग्रवाल ने कही। फिक्की फ्रेम्स-लीप 2020 में 'ट्रांसफार्मिंग थ्रू स्पोर्टस एजुकेशन' विषय पर बोलते हुए अनन्य ने देशभर में क्वालिटी ग्रासरूट ट्रेनिंग प्रोग्राम्स के माध्यम से खेल के क्षेत्र के अलावा समाज में सकारात्मक बदलाव लाने के ग्रुप के विजन को सबके सामने रखा। अनन्य ने कहा कि गोवा और उदयपुर में हमारे ग्रासरूट फुटबाल डेवलपमेंट मॉडल हैं और इनकी सफलता पर हमें बहुत खुशी है। हम अब ओडिशा की ओर देख रहे हैं और हमारा लक्ष्य वहां एक फुटबाल एक्सीलेंस प्रोग्राम शुरू करने का है।

हिंदुस्तान जिंक द्वारा उदयपुर में संचालित जिंक फुटबाल और गोवा में वेदांता सेसा गोवा आइरन और सेसा फुटबाल अकादमी सफलता से काम कर रही हैं और देश के लिए क्वालिटी फुटबालर पैदा कर रहे हैं।

स्माइल ट्रेन इंडिया ने क्लेफ्ट मरीजों को सहायता पहुंचाई

उदयपुर (विज्ञप्ति)। कोविड-19 लॉकडाउन ने सभी गैर-कोविड बीमारियों से सम्बंधित स्वास्थ्य मामलों को प्रभावित किया है। ऐसे में स्माइल ट्रेन इंडिया ने क्लेफ्ट लिप (कटे होंठ) और पैलेट (तालु) की सर्जरी से मरीजों को सहायता पहुंचाई है। वाइस प्रेसिडेंट ममता कैरोल ने कहा कि हमारी टोल फ्री क्लेफ्ट हेल्पलाइन की शुरुआत ऐसे राष्ट्रीय संसाधन विकसित करने के उद्देश्य से की गई थी, जो क्लेफ्ट रोगियों के लिए आसानी से उपलब्ध हो सकें। इस हेल्पलाइन से लॉकडाउन के दौरान रोगियों और उनके परिवारों को बड़ा सहारा मिला। स्माइल ट्रेन ने जयपुर, जोधपुर, कोटा, माउंट आबू, उदयपुर, श्रीगंगानगर और भरतपुर में 11 सहयोगी अस्पतालों के माध्यम से 34,250 से अधिक क्लेफ्ट सर्जरी कराने में मदद पहुंचाई है।

जीबीएच अमेरिकन हॉस्पिटल के डॉ. गुरु भूषण ने कहा कि स्माइल ट्रेन के सहयोग से कटे होंठ और तालु के साथ पैदा हुए बच्चों को सुरक्षित और गुणवत्तापूर्ण उपचार प्रदान करने में सक्षम हैं, ताकि उन बच्चों के लिए उपयोगी जीवन जीना सुनिश्चित किया जा सके। स्माइल ट्रेन इंडिया, की टोल फ्री नेशनल क्लेफ्ट हेल्पलाइन 18001038301 एक वरदान साबित हुई है।

एआई-पावर्ड वॉयस चैटबॉट लॉन्च

उदयपुर (विज्ञप्ति)। आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल लाइफइंश्योरेंस ने गूगल असिस्टेंट पर कस्टमर सर्विस चैटबोट LiGo की शुरुआत की है। इस सुविधा के माध्यम से कंपनी के पॉलिसी धारक OK Google, I want to speak to ICICI Prudential Life LiGo' or 'May I talk to ICICI Prudential Life LiGo' जैसे सरल वॉयस कमांड्स देकर अपने सवालों के जवाब हासिल कर सकते हैं।

मैनेजिंग डायरेक्टर एन.एस. कन्नन ने बताया कि आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल लाइफ में हमारे सभी इनोवेशन ग्राहकों को केंद्र में रखते हुए रचे जाते हैं। कुछ समय पहले हमने श्री 'वी' यानी वीडियो, वॉयस एंड वर्नाकुलर के आधार पर अपनी हाइपर-पर्सनलाइजेशन यात्रा शुरू की थी। हमारे ग्राहकों की उभरती जरूरतों को पूरा करने के लिए हमने अपने ग्राहक सेवा वॉयस बोट LiGo को 'गूगल असिस्टेंट' पर सक्षम किया है और इसे सभी प्लेटफार्मों और उपकरणों पर उपलब्ध कराया है।

बच्चों के टीकाकरण में देरी घातक

उदयपुर (विज्ञप्ति)। टीकाकरण बच्चों में बीमारियों की रोकथाम का सबसे प्रभावी व किफायती तरीका है। यह परियोजनाएं गर्भवती महिलाओं, नवजात शिशुओं व बच्चों के लिए चलाई जाती हैं। यह जानकारी पारस जे. के. हॉस्पिटल के नवजात रोग विशेषज्ञ डॉ. राजकुमार ने राष्ट्रीय टीकाकरण माह के तहत चलाये जा रहे जागरूकता कार्यक्रम में दी।

उन्होंने बताया कि टीकाकरण नवजात को वर्तमान से लेकर भविष्य में होने वाली बीमारियों से बचाता है। पारस जे. के. हॉस्पिटल में 15-20 बीमारियों का टीकाकरण किया जाता है साथ ही गर्भवती महिलाओं का भी टीकाकरण किया जाता है। शिशुओं में जन्म से लेकर 18 वर्ष तक की आयु तक टीके लगाये जाते हैं इसलिए बच्चों के टीकाकरण में अनावश्यक देरी घातक सिद्ध हो सकती है।

रितिका को पीएच. डी.

उदयपुर (विज्ञप्ति)। मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय के वाणिज्य संकाय की शोधार्थी रितिका चित्तौड़ा को 'विदेशी नियंत्रित भारतीय कंपनियों एवं घरेलू कंपनियों में वित्तीय प्रबंधन व्यवहारों का एक अध्ययन' विषय पर शोध हेतु पीएचडी की उपाधि प्रदान की गई है। रितिका ने अपना शोधकार्य वाणिज्य महाविद्यालय के लेखांकन एवं व्यवसायिक सांख्यिकी विभाग के विभागाध्यक्ष प्रोफेसर शूरवीरसिंह भाणावत के निर्देशन में पूरा किया।

निसान मैग्नाइट की डिजाइन का खुलासा

उदयपुर (विज्ञप्ति)। निसान इंडिया ने अपने नवीनतम बी-एसयूवी-निसान मैग्नाइट कन्सेप्ट को तैयार करने के पीछे छिपे डिजाइन की मूल प्रेरणा का खुलासा किया है। साथ ही इस कन्सेप्ट के इंटीरियर और एक्सटीरियर के नए डिजाइन पहलुओं की जानकारी दी गई है। निसान मोटर कार्पोरेशन के डिजाइन मैनेजर ताकुमि योनेयामा ने कहा कि निसान फैमिली की यह नवीनतम पेशकश एसयूवी विरासत को भविष्योन्मुखी बना रही है। यह खासतौर से भारत और निर्यात देशों के लिए लायी है।

आंत में रक्त स्त्राव का सफल इलाज

उदयपुर (विज्ञप्ति)। गीतांजली मेडिकल कॉलेज एवं हॉस्पिटल, उदयपुर में कोरोना महामारी से जुड़े सभी आवश्यक नियमों का गंभीरता से पालन करते हुए रोगियों का सावधानीपूर्वक इलाज किया जा रहा है। न्यूरोसाइंसेस टीम के न्यूरो वासक्युलर इन्टरवेंशनल रेडियोलोजिस्ट डॉ. सीताराम बारठ, गैस्ट्रोलोजिस्ट डॉ. धवल व्यास एवं टीम, एनेस्थीसिया विभाग से डॉ. करुणा, डॉ. नेहा, डॉ. मानव, कैथ लैब व सी.सी.यू स्टाफ के प्रयासों द्वारा इ.एच.पी.वी.ओ (एक्स्ट्राहीपेटिक पोर्टल वेन ओब्सट्रकशन) की तकलीफ से जूझ रहे रोगियों का सफल उपचार किया गया।

एलएंडटी का श्नाइडर इलेक्ट्रिक में विनिवेश संपूर्ण

उदयपुर। लार्सेन एंड टुब्रो (एलएंडटी) ने अपने इलेक्ट्रिकल एंड ऑटोमेशन (एलएंडटी ईएंडए) बिजनेस का ऊर्जा प्रबंधन एवं ऑटोमेशन के क्षेत्र में दुनिया की प्रमुख कंपनी, श्नाइडर इलेक्ट्रिक में रणनीतिक विनिवेश किये जाने की घोषणा की। लार्सेन एंड टुब्रो के ग्रुप चेयरमैन ए.एम. नाईक ने कहा कि अपने तरह के विशिष्ट, महत्वपूर्ण एवं जटिल विनिवेश की घोषणा मई 2018 में की गयी थी। आवश्यत विनियामक स्वीकृतियां मिल जाने और जरूरी शर्तों को पूरा कर लिये जाने के बाद, अब यह विनिवेश पूरा हो गया है। यह विनिवेश एलएंडटी के भावी विकास को देखते हुए किया गया है। एलएंडटी लगातार अपने बिजनेस पोर्टफोलियो का आकलन करता है और दीर्घकालिक दृष्टि से पूंजी आवंटन का निर्णय लेता है। इलेक्ट्रिकल एंड ऑटोमेशन बिजनेस से इसका निकलना, महत्वपूर्ण पोर्टफोलियो समीक्षा प्रक्रिया का एक हिस्सा है।

प्रिय ! प्रणय की माधुरी तुम

-डॉ. रेनू सिरोया 'कुमुदिनी'-

तुम प्रणय की माधुरी हो, मेरे मन के मीत हो।
होठों की बांसुरी हो, साँसों का संगीत हो।।
हिचकियों का नाद हो तुम, चित्त की हो चेतना।
सृष्टि का सौंदर्य तुमसे, हृदय की संवेदना।।
मेहंदी और महावर तुम ही मेरे जग की प्रीत हो।
खुद से ही हारी हूँ प्रियतम, तुम ही मेरी जीत हो।।
नील नभ के तुम सितारे, प्यार तुमसे है प्रिये।
पल मधुर अभिसार के प्रियतम तुम्हें अर्पण किये।।
महक तन मन में घुली तुम कुमुदिनी की प्रीत हो।
प्रणय की हो माधुरी तुम, मेरे मन के मीत हो।।

सबसे बड़ा 151 फीट ऊंचा तिरंगा लहराया

उदयपुर (विज्ञप्ति)। जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय ने अपने

84वें स्थापना दिवस पर मेवाड़ के सबसे ऊंचे 151 फीट ऊंचे तिरंगे झण्डे का लोकार्पण किया। मुख्य अतिथि कुलाधिपति प्रो. बलवंत शांतिलाल जॉनी, कुल प्रमुख भंवरलाल गुर्जर, कुलपति प्रो. एस. एस. सारंगदेवोत, पूर्व

कुलपति कैलाश सोडाणी तथा विशेषाधिकारी डॉ. हेमशंकर दाधीच उपस्थित थे।

इस अवसर पर प्रो. कैलाश सोडाणी ने कहा कि पंडित जनार्दनराय नागर ने आजादी के पूर्व मेवाड़ में शिक्षा की अलख जगाने का कार्य किया। मदन मोहन मालवीय की तरह नागरजी ने आदिवासी वर्ग के लिए कार्य किया। प्रो. सोडाणी ने शिक्षकों से कहा कि वे छात्रों को सप्ताह में एक बार भगतसिंह, सुभाषचन्द्र बोस, चन्द्रशेखर आजाद सहित आजादी दिलाने वाले क्रांतिकारियों की जीवनी बताएं।

कुलपति प्रो. सारंगदेवोत ने लोकार्पण करते कहा कि तिरंगा हम सभी का आशाओं, आकांक्षाओं का प्रतिनिधित्व करता है। यह हमारे राष्ट्रीय गौरव का प्रतीक है। जनुभाई ने पांच कोर्स से अपनी संस्था को शुरू किया जो आज 85 कोर्स को संचालित कर रही है। समारोह का संचालन डॉ. हरीश चौबीसा ने तथा आभार प्रो. जीवनसिंह खरकवाल ने दिया। समारोह में सभी संकायों के डीन, डायरेक्टर, विभागाध्यक्ष व कार्यकर्ता उपस्थित थे।

उदयपुर में फिल्म सिटी का सपना हो गया साकार

-अलसीगढ़ में बन रहा है उदयपुर का पहला फिल्म सिटी स्टूडियो-

उदयपुर (का. सं.)। शहरवासियों का उदयपुर में फिल्मसिटी होने का बरसों पुराना सपना अब सच होने जा रहा है। झाड़ोल तहसील के अलसीगढ़ क्षेत्र में विशाल 'कलाक्षेत्र' स्टूडियो फिल्मसिटी की शीघ्र ही स्थापना होने जा रही है जो फिल्मसिटी के साथ ही देश-विदेश के पर्यटकों के लिए एक शानदार टूरिस्ट डेस्टिनेशन भी होगा। यही नहीं यह थीम बेस्ड शाही शादियां, विश्वस्तरीय कार्यक्रमों, सम्मेलनों, डांस शो, रियलिटी शो, रिकॉर्ड होल्डिंग इवेंट, इन्फोटेनमेंट शो आदि का भी प्रमुख केंद्र भी बनेगा। यहां स्थानीय कलाकारों को विश्वस्तरीय कलाकारों के साथ काम करने का मौका तो मिलेगा व साथ ही बड़ी संख्या में उदयपुर के लोगों को रोजगार के नए व शानदार अवसर भी मिल सकेंगे। यह जानकारी प्रेसवार्ता में कलाक्षेत्र के फाउंडर सुनील भट्ट ने दी। इस फिल्मसिटी के फाउंडर सुनील भट्ट व जसवंत परमार तथा ऑनर साहिल भट्ट, पुनीत जैन हैं। यही नही इस फिल्मसिटी को लेकर मुम्बई से विख्यात फ्रेम्स प्रोडक्शन हाउस के साथ इसका टाइअप है जिसके ऑनर हेमंत रूपारेल व रंजीत ठाकुर हैं।

कला क्षेत्र के फाउंडर सुनील भट्ट ने बताया कि अरावली की हरी-भरी पहाडियों के बीच बसी झीलों की नगरी का प्राकृतिक सौंदर्य बरसों से देश और दुनिया के पर्यटकों व फिल्म निर्माताओं को अपनी ओर आकर्षित करता रहा है। प्रकृति की इस नियामत को अब फिल्म स्टूडियो के जरिये पूरी दुनिया को दिखाया व सराहा जाएगा। यहां के लोगों का बरसों पुराना अपनी फिल्मसिटी का सपना कलाक्षेत्र स्टूडियो फिल्म सिटी के माध्यम से सच होने जा रहा है। 'कलाक्षेत्र' का शाब्दिक अर्थ कला का क्षेत्र होता है जिसमें कला के आधार पर किसी विशिष्ट जगह को जाना तथा आत्मसात किया जा सकता है। यहां पर परफॉर्मिंग आर्ट्स और मोशन पिक्चर्स का केंद्र विकसित किया जाएगा जिससे विश्वपटल पर उदयपुर का नाम और अधिक प्रसिद्ध होगा। यह स्टूडियो उदयपुर को विश्वस्तरीय आयोजनों, पेजेंट्री और बहुराष्ट्रीय सम्मेलनों के वैश्विक मानचित्र पर भी रखेगा। इस स्टूडियो की स्थापना के साथ ही उदयपुर में पर्यटन बूम आएगा व रोजगार के नए अवसर खुलेंगे।

फाउंडर जसवंत परमार ने बताया कि 150 से अधिक बीघा में फैली यह फिल्मसिटी उदयपुर जिले की झाड़ोल तहसील के पीपलवास, अलसीगढ़ में बनने जा रही है जो खूबसूरत पहाड़ी क्षेत्र में समुद्र तल से 540 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है। अलसीगढ़ प्रकृति की गोद में बसा एक छोटा सा गांव हैं जो उदयपुर का तेजी से विकसित हो रहा पर्यटन क्षेत्र है। अलसीगढ़ के रास्ते में दर्जनों

छोटे-छोटे गांव, झरने और हरे-भरे खेत दिखाई देंगे। यह स्थान मंत्रमुग्ध कर देने वाले परिदृश्यों को पूरी दुनिया से परिचित कराएगा। कलाक्षेत्र स्टूडियो फिल्मसिटी अपने कई सेट्स और सुविधाओं के कारण निर्माताओं और निर्देशकों के लिए आने वाले समय में पसंदीदा स्थान होगा।

इसके अलावा वेब सिरीज, डेली सोप ओपरा सहित सभी ऑनलाइन प्लेटफार्म के लिए तैयार होने वाले सीरियल, शॉर्ट फिल्म्स आदि को भी शानदार लोकेशन व एक्सपोजर यहां मिल सकेगा। यह फिल्मसिटी एक ऐसा बुनियादी ढांचा बनाने के लिए प्रयासरत है जो हर तरह से फिल्म निर्माता के मिशन को पूरा करती है। फिल्मांकन और शूटिंग के अलावा, स्टेज परफॉर्मिंग आर्ट्स, ओपन माइक, गिग्स, इन हाउस और ओपन एयर कॉन्सर्ट्स, थिएटर वर्कशॉप, इवेंट्स, कॉन्क्लेव, प्रदर्शनियों और शादियों का अवसर भी प्रदान करेगा।

साहिल भट्ट, सुनील भट्ट, जसवंत परमार तथा पुनीत जैन

स्टूडियो में मिलने वाली सुविधाएं :

डेढ़ सौ बीघा क्षेत्र में विस्तृत फिल्मसिटी का एक स्टूडियो कलाक्षेत्र बनकर तैयार है जिसमें 12500 वर्गफुट साउंड प्रूफ ए.सी. हॉल, (40 फीट ऊंचाई), रहने के लिए 10 डीलक्स कमरे, 8 मेकअप रूम, रसोई के लिए पर्याप्त जगह, कैंटीन 1000 वर्गफुट, स्टोर रूम छोटे आयोजनों के लिए, 5000 वर्गफुट की छत, लगभग 2000 वर्गफुट का छोटा गार्डन आदि हैं। साढ़े बारह हजार फीट के चालीस फीट ऊंचाई के डो में डोम में एक पिलर नहीं है। फिल्मसिटी में भविष्य में किसी भी प्रकार के विकास के लिए पर्याप्त जगह है। सुविधाओं के विस्तार के साथ ही यहां पर कई स्टूडियोज में एक साथ कई फिल्मों अथवा एक ही फिल्म के कई हिस्सों की शूटिंग हो सकेगी। हॉस्पिटल, कोर्ट, मंदिर, मार्केट व अलग-अलग लॉकेशन मिल सकेगी। मुंबई की तर्ज पर यहां पर ऐसे सेट्स भी होंगे जिनको रीयूज भी किया जा सकेगा। आउटडोर शूटिंग के लिए प्राकृतिक पहाड़ियां, घाटियों, झीलों, गांव को लिया जा सकता है। स्टूडियो महाराणा प्रताप हवाई अड्डा, डबोक से 50 किमी तथा उदयपुर सिटी रेलवे स्टेशन से 27 किमी की दूरी पर है। वृहद विचार यह है कि यहां एक ही छत के नीचे कला और गति चित्रों के प्रदर्शन के लिए एक केंद्र विकसित कर उदयपुर को एक नया मुकाम दिया जा सके। उदयपुर के सुरम्य सौंदर्य की संभावनाओं को साकार करने और चलचित्रों और टेलीविजन के वैश्विक उद्योग के साथ संबंध बनाकर स्थानीय अर्थव्यवस्था के बीच नेटवर्क स्थापित करने का भरसक प्रयास रहेगा।

फ्रेम्स प्रोडक्शन हाउस के बारे में :

फ्रेम्स प्रोडक्शन हाउस मुंबई का ख्यातिप्राप्त प्रोडक्शन हाउस है जिसने कई कॉमेडी विद कपिल सहित रियालिटी शोज को प्रमोट किया है जैसे इडियाज बेस्ट डांसर, सुपर डांसर-3, कानपुर वाले खुरानाज, द कपिल शर्मा शो, दिल है हिन्दुस्तानी-2, सुपर डांसर-2, सबसे बड़ा कलाकार आदि सुपरहिट टीवी शोज शामिल हैं। फ्रेम्स प्रोडक्शन हाउस के ऑनर हेमंत रूपारेल और रंजीत ठाकुर भी इस फिल्मसिटी से एसोसिएट के रूप में जुड़े है। फ़िल्मसिटी से इन दोनों ही नामचीन लोगो के जुड़ने से इनके अनुभवों का फायदा मिलेगा। हेमंत और रंजीत ने उदयपुर को काफी खूबसूरत शहर बताते हुए यहाँ पर फ़िल्म और शो मेकिंग की अपार संभावनाएं बतायी। इस दौरान हेमन्त और रंजीत ने राजस्थान की पहली फ़िल्मसिटी उदयपुर में खुलने पर खुशी जताते हुए कहा कि अब तक उदयपुर आउटडोर शूटिंग के लिए जाना जाता था लेकिन अब सुनील भट्ट और जसवंत परमार की इस पहल से अब यह इंडोर शूटिंग के लिए पहचाना जाएगा।

राजस्थान में भी मिलनी चाहिए सब्सिडी :

फिल्मसिटी के फाउंडर सुनील भट्ट और जसवंत परमार ने अन्य राज्यों की तरह राजस्थान में भी फिल्मसिटी को कई प्रकार की सब्सिडीज देने की मांग की। दोनों फाउंडर मेम्बर्स का कहना है कि सरकार इसमे साथ दे तो वर्ल्ड में टूरिस्ट डेस्टिनेशन के रूप में मशहूर उदयपुर में भी फिल्म निर्माता प्रमुख शूटिंग स्थल के रूप में अपनी पहचान बना सकते है।

कृषि फार्म पौंड से होगी सालाना लाखों की आय

उदयपुर (विज्ञप्ति)। आप कृषक हैं और आपके पास एक से दो एकड़ जमीन है और उसमें वर्षा के पानी को स्टोरेज करने के लिए अगर फार्म पौंड बना रखा है तो अकेले पौंड वाले भू-भाग पर एक नहीं पूरे दस तरह के फायदे लिये जा सकते हैं। इससे लाखों रुपए की आमदनी की जा सकती है।

वरिष्ठ पत्रकार विमलेश शर्मा ने बताया कि माना कि आपके पास दो एकड़ का कृषि फार्म है। उसमें सबसे पहले फार्म पौंड बनाना पड़ेगा। पौंड पर सरकार से नब्बे हजार से 20 लाख रुपए तक यानी 75 प्रतिशत सब्सिडी मिलती है। उदाहरण के तौर पर एक बीधा में फार्म पौंड बनवाना है तो उस पर करीब साढ़े छह लाख रुपए के आसपास का खर्चा बैठता है। इस पर सरकार से पांच लाख रुपए की सब्सिडी मिल जाएगी। अगर खुद का ट्रेक्टर व खुदाई के संयत्र आदि हैं तो बाकी का खर्चा बचाया जा सकता है और पौंड सरकार से मिली सब्सिडी में ही बनकर तैयार हो जाएगा।

पौंड में एकत्र वर्षा जल खेत की सिंचाई में तो काम आएगा ही उसके साथ इसमें मछली व बतक पालन भी किया जा सकता है। मछली का बीज सरकार की तरफ से मत्स्य पालकों को

बहुत से प्रदेशों में फ्री में भी दिया जाता है। इस पौंड पर जालीदार घर बनाकर मुर्गी पालन किया जा सकता है और इस घर के ऊपर छाया के लिए सोलर प्लांट लगा सकते हैं। इस पौंड के पास अगर दो छोटे पौंड और बना ले तो एक में कमल और एक में सिंघाड़े की खेती की जा सकती है। इन्हीं छोटे पौंडों में सिप डाल मोती की खेती की भी जा सकती है। बतख, मुर्गे की बिंठ मछली के भोजन के रूप में काम आती है। मछली से प्राप्त बेस्ट से ऐसी खाद बन जाती है जो खेती में सबसे उपयुक्त है।

जयपुर से अजमेर राष्ट्रीय मार्ग पर बीचून के पास भैराणा गांव में राष्ट्रीय स्तर पर पुरस्कृत किसान सुरेन्द्र अवाना अपने शिवम डेयरी व कृषि अनुसंधान केन्द्र पर कुछ ऐसे ही नवाचार कर रहे हैं। वर्तमान में वे फार्म पौंड से पांच तरह के फायदे ले रहे हैं और आने वाले छह महीनों में वे दस तरह के लाभ लेने लग जाएंगे। श्वेत व हरित क्रांति के साथ राजस्थान में नीली क्रांति (मछली पालन) लाने में जुटे अवाना के अनुसार पौंड पर ये नवाचार कर 10 से 15 लाख रुपए सालाना की आसानी से कमाई की जा सकती है। दस तरह के नवाचार से तो आमदनी को 50 लाख रुपए सालाना किया जा सकता है।

सत्यासत्य

आज पंडित जी रास्ते में ही मिल
गए दोनों को प्रसाद दिया
आगे जा कर दोनों ने प्रसाद चार
बच्चों को दो दिया।

एक ने नहीं खाया
क्योंकि उसे
डायबिटीज़ था।
दूसरे ने नहीं
खाया क्योंकि
उसे ईश्वर पर भरोसा नहीं था।
एक ने सोचा दूसरे को भी
डायबिटीज़ है उसी की तरह
और दूसरे ने सोचा कि उसको भी
ईश्वर पर भरोसा नहीं है।
उसी की तरह
दोनों एक दूसरे के असत्य को
अपना अपना सत्य बना कर
जहाँ जा रहे थे
वहीं चल दिये
एक असत्य के साथ।

- प्रेमलता पिंकी वैष्णव

कैसे-कैसे अजूबे विवाह (2)

शब्द रंजन के गत अंक में बालक-बालिकाओं में प्रचलित ढूला-ढूली विवाह के सम्बन्ध में बड़ा ही दिलचस्प विवरण प्रकाशित किया गया था। उसी कड़ी में न केवल राजस्थान में अपितु राजस्थान के बाहर भी ये ढूला-ढूली बड़े लोकप्रिय रहे हैं। तुलसी विवाह की तरह इन गुड्डे-गुड्डियों के विवाह में भी हजारों रूपये भी खर्च किये जाते। कहीं-कहीं तो इनका विवाह नए विवाह से भी सवाया, अधिक साजसज्जा, रस्म अदायगी और अच्छे विधि-विधानपूर्वक समाप्त होता है। कुछ रोचक विवरण द्रष्टव्य है-

(1) गुड्डे-गुड्डियों का विवाह :

कानपुर। यहां सफेद कॉलोनी जूही में छेदी की अम्मा की गुड़िया व बग्गड़ के गुड्डे का विधिवत विवाह हुआ था। बारात निकाली गई। आतिशबाजी हुई। द्वारचार, जलपान, विवाह, दान-दक्षिणा, दहेज, नृत्यगान व विदा के कार्य सम्पन्न हुए और अब वधू को वापस लाने की तैयारी जारी है। हजारों लोगों ने इस विवाह में किसी न किसी रूप में शिरकत की। **- राष्ट्रमित्र, 20-06-1971**

(2) गुड्डे-गुड्डी की शादी में 15 हजार खर्च :

सांगली (महाराष्ट्र) 30 अगस्त (यूएनआई)। राजीव तथा श्यामा की कल यहां धूमधड़ाके और तड़क-भड़क के साथ शादी हो गई। बारात में सजे हुए हाथी, घोड़े और ऊंट भी थे। इनके अलावा बाजा बज रहा था। वर तथा वधू अच्छी पोशाक में थे। वे यहां के किंडर गार्डन में स्कूल में पढ़ने वाली भाग्यश्री तथा विजयसिंह के गुड्डे-गुड़िया थे।

दुल्हन की मां सांगली के भूतपूर्व शासक विजयसिंह राजे की तीन वर्षीया लड़की है। इस शादी-विवाह पर सिर्फ 15 हजार रूपये खर्च हुए। नव विवाहित जोड़े को भेंट में सोना तथा चांदी मिली। लगभग 500 व्यक्तियों को निमंत्रित किया गया था जिनमें दुल्हन की मां की लगभग दो सौ सहपाठी भी थी। उन्होंने दावत खाई और आशीर्वाद दिया।

- राजस्थान पत्रिका, 30-08-1971

(3) फूलों से विवाह :

गुजरात में कुनबी आदिवासी जातियों में वृक्ष विवाह की प्रथाएं प्रचलित हैं। यहां लड़की का विवाह पहले आम या अन्य प्रकार के वृक्षों से किया जाता है। कुनबियों की एक शाखा में होने वाले 'गुलफुन्दर' विवाह की प्रथाएं भी बड़ी विचित्र हैं। विवाह योग्य कन्या को यदि उचित समय पर वर नहीं मिल पाता है तब लड़की का विवाह फूलों के गुच्छों को वर के स्थान पर रख कर दिया जाता है।

गुड्डे-गुड्डी का वैवाहिक जोड़ा

विवाह के दिन मुझौए फूलों को किसी नदी, तालाब या कुए में फैंक दिया जाता है। फूलों के गुच्छों के साथ विवाह सम्पन्न होने के बाद लड़की को सौभाग्यवती व सदा सुहागिन माना जाता है। बाद में जब कभी भी वर मिलता है, तब लड़की का विवाह कर दिया जाता है। यदि लड़की का पति मर जाता है तब भी उसे विधवा नहीं कहा जाता है, अपितु वह सदा सुहागिन कहलाती है।

(4) आम-महुए से विवाह :

कुरमी शाखा की कुछ जातियों में पहले वृक्ष विवाह किया जाता है। इनमें वर का विवाह पहले आम्रतरू से होता है। विवाह के समय लड़के को वृक्ष के समीप खड़ा कर दिया जाता है। लड़के व वृक्ष को सूत के डोरों से बान्ध दिया जाता है। बाद में पत्तों की बनी माला वर के गले में डालकर वर को वृक्ष से मुक्त किया जाता है। वृक्ष से मुक्त होकर वर पेड़ पर सिन्दूर के टीके लगाता है। दूसरी ओर कन्या का विवाह महुए के वृक्ष से किया जाता है। इसके उपरान्त ही लड़के-लड़की का विवाह किया जाता है।

(5) प्रतिमा से विवाह :

नेपाल में नेवार जाति में लड़की का विवाह पहले किसी आदमी से नहीं किया जाकर भगवान नारायण की प्रतिमा से होता है। इस विवाह को 'सुवर्ण विवाह' या 'इही' कहा जाता है। इस विवाह में लड़की की उम्र 5 से 8 वर्ष होती है यानी युवावस्था आने से पूर्व यह संस्कार पूरा किया जाता है। इसे बड़ा ही पवित्र माना जाता है जिसे देखने बहुत बड़ी संख्या में लोग एकत्रित होते हैं।

डॉ. तुक्तक के संग्रह की सजावटी गुड़िया

(6) आक से विवाह :

उत्तरप्रदेश के कुछ जिलों में ब्राह्मणों से आक विवाह की प्रथा प्रचलित है। यदि किसी पुरुष की मृत्यु हो जाती है और वह पुरुष दूसरा विवाह करना चाहता है तब उसका विवाह पहले आक के पौधों से किया जाता है। लोग वर को उसके निवास स्थान से दूर खेतों के बीच जन्मे आक के पास ले जाते हैं। पौधे के पास ही विवाह की वेदी बनाई जाती है जहां विवाह सम्पन्न होता है। लोगों का ऐसा कहना है कि आक से विवाह होने के थोड़े दिन बाद लड़के का विवाह लड़की से कर दिया जाता है।

(7) लता से विवाह :

मध्यप्रदेश के बस्तर जिले की कुछ आदिवासी जातियों में विवाह बड़े ही विचित्र प्रकार से किया जाता है। जन्मते ही लड़की का विवाह किसी नदी के किनारे उगे वृक्ष या लता से कर दिया जाता है। वृक्ष से विवाह के बाद वृक्ष पर कुछ इस प्रकार के निशान बनाये जाते हैं ताकि औरों को यह पता रहे कि इस वृक्ष से विवाह किया जा चुका है। वृक्ष से विवाह के बाद लड़की सुहागिन कहलाने लगती है। लड़की जब बड़ी हो जाती है तो उसका किसी लड़के से विवाह कर दिया जाता है। **-जय राजस्थान, उदयपुर, 26 फरवरी 1989**

(8) ढाक-पत्तों के दूल्हा-दुल्हन :

मांगीलाल सोलंकी के अनुसार मध्यप्रदेश के भीली अंचल में ढाक-पत्तों के दूल्हा-दुल्हन का ब्याह रचाया जाता है। पूरा का पूरा गांव दो हिस्सों में बंट जाता है। एक पक्ष होता है दूल्हे का, दूसरा दुल्हन का। अपने-अपने पक्ष के तमाम क्रिया-कलापों को ये सम्पन्न करते हैं, सगाई से लेकर विवाह तक। ठीक उसी प्रकार जैसे कि लोग अपने जातीय विवाह में करते हैं। दूल्हा-दुल्हन के प्रत्येक अवयव को कलात्मक ढंग से बनाते हैं। ढाल के हरे पत्तों एवं डण्ठलों के अतिरिक्त इनकी संरचना में अन्यान्य किसी वस्तु का उपयोग नहीं किया जाता है। इनका साज-शृंगार भी इनके अपने पारम्परिक वस्त्राभूषणों के अनुरूप ही होता है। ये दूल्हा-दुल्हन देखने में अत्यन्त कलात्मक एवं आकर्षक होते हैं, गुड्डे-गुड़ियों की भांति। दोनों ही पक्ष एक-दूसरे पर गाली-गीतों की झड़ी लगा देते हैं। इसी तरह वटवृक्ष के विवाह की भी प्रथा है। इनकी तुलना हम हिन्दुओं में प्राप्त 'तुलसी-विवाह' से कर सकते हैं।

(9) घोंसले में विवाह :

पक्षियों में भी प्रेम विवाह को लेकर बड़े दिलचस्प तरीके पाये जाते हैं। कहते हैं कि नर बया मादा को आकर्षित करने के लिए बड़ी सुन्दर जगह किसी वृक्ष की डाल पर एक नहीं चार-चार, पांच-पांच तक बड़े सुन्दर घोंसले बुनता है। ये घोंसले इतने खूबसूरत और भिन्न आकार-प्रकार और अन्दाज के होते हैं कि कुछ कहते नहीं बनता। जब ये पूरे हो जाते हैं तब बया अपना ब्याह रचाने की बात सोचता है।

ऐसी स्थिति में वह किसी एक घोंसले में बैठकर बड़ा ही मधुर संगीत छेड़ता है और मादा को आकर्षित करता है। बड़ी इन्तजार के बाद मादा आती है और एक-एक घोंसले का बड़ी बारीकी से निरीक्षण करती है। यदि किसी घोंसले को अपने लिए सन्दर और सुविधाजनक पाती है तो शादी कर लेती है अन्यथा छोड़ कर चली जाती है।

मादा बया यदि उसमें रहने लगती है तो न केवल उसकी शादी होती है, आगे जाकर वह अण्डे भी देती है परन्तु अन्ततोगत्वा कुछ दिन रहने के पश्चात नर बया वहां से चला जाता है और मादा ही उसमें रहने लगती है पर नर बया चुप नहीं रहता। वह फिर नये नीड़ के निर्माण में खो जाता है और इसी प्रकार घोंसले बनाकर फिर अन्य मादा को आकर्षित करता है अन्यथा कि फंसाता है।

(10) पुष्प-गुच्छ से विवाह :

गुजरात की कदावा कम्बी जाति की लड़कियों के जीवन में विवाह का सौभाग्यशाली दिन बारह वर्षों के अन्तराल में एक ही आता है जबकि उन्हें पति मिल जाने का सौभाग्य बहुत ही मुश्किलों से प्राप्त होता है इसीलिए एक दस वर्षीया लड़की भी बूढ़ी समझी जाती है और उसकी स्थिति बड़ी दयनीय होती है।

अगर एक परिवार में कई लड़कियां हैं और कोई बारह वर्षों की प्रतीक्षा नहीं करना चाहती तो खिले फूलों के एक गुच्छे के साथ उसका वैधानिक विवाह सम्पन्न कर दिया जाता है। जब फूलों का वह गुच्छा मुरझा जाता है तो लड़की विधवा मान ली जाती है। इस जाति विशेष में विधवा का भविष्य अन्धकारपूर्ण नहीं है। विधवा पर यह प्रतिबन्ध नहीं कि वह पति प्राप्त करने के लिए 4380 दिन इन्तजार करे। वह किसी भी दिन किसी भी समय दूसरा पति प्राप्त कर सकती है जबकि उसको अन्य अविवाहित बहिनें उसकी बराबरी करने में अपने को असमर्थ पाती हैं। **-मनोहर कहानियां, मई 1976**

(11) वृक्षों से विवाह :

विक्रमसिंह बुन्देला के अनुसार तिरहुत में मंगली लड़की का विवाह पीपल के पेड़ के साथ कर दिया जाता है ताकि नक्षत्र दोष का अनिष्ट पीपल पर पड़े और मनुष्य वर को किसी विपत्ति का सामना न करना पड़े।

आंध्र के कूपड़वंशी ग्रामीणों में कन्या का विवाह 12 वर्ष तक कर देने का रिवाज है परन्तु किसी कारणवश विवाह नहीं हो सका तो किसी फलदार पेड़ से उसका विवाह कर देते हैं और उसे सुहाग के सभी प्रतीक धारण करा देते हैं। इसके पश्चात उसका पुनर्विवाह किसी भी आयु में हो सकता है। यदि विवाह न भी हो पाए तो उसे कोई लांछन नहीं लगा सकता।

नेपाल की नेवार जाति के लोग अपनी लड़कियों का विवाह बिल्बवृक्ष के साथ करते हैं। इसके पश्चात जब किसी पुरुष के साथ विवाह होता है तो वह 'उप पति' कहलाता है। उप पति को कोई स्त्री कभी भी बहिष्कृत कर सकती है। उसे भृत्य जितने ही अधिकार प्राप्त होते हैं। हिसार जिले की घुमकूड़ बावरिया जाति में और सरगुजा के भीलों में विवाह की अनिच्छुक लड़कियों का विवाह पीपल के वृक्ष से कर देते हैं और यह मान लेते हैं कि अब वह सुहागन है।

-रंगायन अप्रेल 1982

ढूली का यह फोटो भेजते बीकानेर से डॉ. कविता मेहता ने बताया कि इस ढूली को कानोड़ निवासी मेरी मामीसा सुशीलादेवी भाणावत (80) ने बनाई है। वे आज भी, बीमार रहती हुई भी पुरानी यादों में खोकर निरन्तर सक्रिय रहतीं अपनी पारम्परिक संस्कृति को सहेजे हुए हैं। उन्होंने नवजात शिशु को झुलाते समय पालने में रंगबिरंगी चिड़ियों से युक्त झूमर, वांदरवाल, खलेची तथा कलात्मक हाथी, घोड़े भी बनाये हैं। कहती हैं, नानी, दादी, सास सभी चले गए हैं मगर उनके द्वारा जो संस्कार-सृजन हस्तगत हुए हैं, वे सुरक्षित रहें तो कुछ-बहुत कुछ बचा रहेगा। उनकी पुत्री लाड़जी कुदाल (61) भी इस कला में माहिर है। मैंने भी ऐसे तरह-तरह के ढूला-ढूली मेरी दादी डेलूबाई से बनाना सीखा है। पापा डॉ. महेन्द्रजी तो इसी परम्परा में वर्षों से तपेखपे हैं।

पारम्परिक गुड़िया

-क्रमश :

(-प्रस्तुति : शब्द रंजन टीम)

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।